कचनार

भाग-1

छठम कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्य-पुस्तक

(एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित।
1

दिशा-बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राजेश भूषण,** राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **हसन वारिस,** निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी. पटना
- **श्री मुखदेव सिंह,** क्षेत्रीय शिक्षां उपनिदेशक, तिरहुत प्रमण्डल, मुजफ्फरपुर
- **श्री रामेश्वर पाण्डेय,** कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना
- **श्री बसंत कुमार,** शैक्षिक निबंधक, बी. एस. टी. पी. सी., पटना
- **डॉ. सैयद अब्दुल मोइन,** विभागाध्यक्ष, एस. सी. ई. आर. टी. पटना
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य,** शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी,** प्राचार्य, टी. आई. एच. एस., पटना

लेखक सदस्य

- **श्री मोहन भारद्वाज,** साहित्यकार, पटना ।
- **डॉ. अशोक कुमार मेहता,** अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
  चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय, दरभंगा
- **डॉ. कमला कान्त भण्डारी,** व्याख्याता, मैथिली,
  राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय,
  शास्त्रीनगर, पटना-23 ।

समीक्षक

- **डॉ. इन्द्रकान्त झा,** पूर्व यूनिवर्सिटी प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,
  मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना-5
- **डॉ. इन्दिरा झा,** अध्यक्ष, मैथिली विभाग, रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय,
  लोहियानगर, पटना-20

समन्वयक

- **डॉ. अर्चना,** व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना

अभार : यूनिसेफ बिहार

आमुख

प्रस्तुत पोथी प्राथमिक कक्षाक छठम वर्गक छात्र कें ध्यानमे रखैत बनाओल गेल अछि। एहि वर्गक छात्रमे एतेक बौद्धिक क्षमता विकसित नहि होइत छैक जे सामाजिक वातावरण ओ परिस्थितिक समुचित विश्लेषण कऽ सही तथ्य आ सही शिक्षाकें ग्रहण कऽ सकय। एहि वर्गक छात्रमे जिज्ञासा तँ होइत छैक, परन्तु ओकर सटीक स्पष्टीकरण ओ नहि कऽ पबैत अछि।

एहि तथ्यकें ध्यानमे राखि निर्धारित पाठ्यचर्याक आलोकमे विभिन्न प्रकारक शिक्षाप्रद पाठक चयन कयल गेल अछि। अध्यापक छात्र लोकनिक बीच अनेक पाठक भाव-भाषासँ जिज्ञासा बढ़ौथिन आ तदनुरूप शिक्षण-कौशलसँ शिक्षार्थीकें शिक्षा प्रदान करथिन। एहि पाठमे गद्य-पद्य दुनू देल गेल अछि। गद्यमे एहि बातक ध्यान राखल गेल अछि जे छात्र पाठसँ ऊबथि नहि, रुचिकर लगनि आ नवीनताक प्रति जिज्ञासा बढ़नि। विभिन्न विधा (कथा, निबंध, कविता आदि) सँ छात्रक ज्ञानकें परिमार्जित ओ परिपुष्ट करबाक चेष्टा कयल गेल अछि।

एहि पोथीमे मिथिलाक संस्कृति, पारिवारिक परिवेश, पर्यावरण, देश आदिसँ कोन तरहेँ तादात्म्य स्थापित कयल जा सकैत अछि आ ओकर प्रभाव समाज पर कतेक दूर धरि पड़त, तकर ध्यान राखल गेल अछि। एहि वर्गक छात्र हेतु सात गद्य आ पाँच पद्यक चयन कयल गेल अछि, जे पूर्णतया राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा (2005) एवं बिहार पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2006 क अलोक में विकसित नवीन (2007) पाठ्यक्रमक अनुकूल अछि। आशा अछि जे एहि पुस्तकक माध्यमे छात्रक ज्ञान-वृद्धि एवं राष्ट्रीय-भावनाक विकास होयतनि। पाठक क्रम एहि तरहेँ राखल गेल अछि जे एक पाठसँ दोसर पाठमे जयबाक उत्सुकता छात्र लोकनिकें बनल रहनि।

छठम वर्गक छात्रक आयु, एहि वर्ग हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम तथा पुस्तकमे वर्त्तनीक एकरूपता रखबाक दृष्टिसँ किछु पाठकें सम्पादित करब आवश्यक भऽ गेल। लेखकलोकनिसँ निवेदन जे एकरा अन्यथा भावेँ नहि लेथि।

पाठ्य-पुस्तकक निर्माणकार्यमे सहयोगी साहित्यकार, जनिक पाठ एहि पुस्तकमे संगृहीत अछि, हुनकालोकनिक प्रति हम सभ आभारी छी।

पुस्तक छात्र, शिक्षक आ सुधी समाजक समक्ष प्रस्तुत अछि। सावधानी रखितहुँ किछु ने किछु त्रुटि होयब संभव। एहि लेल सम्प्रति क्षमा-याचना मात्र कयल जा सकैत अछि।

निदेशक

विषयानुक्रम

क्र० सं०	शीर्षक		पृष्ठ सं०
1.	जानकी (कविता)	....	5–7
2.	दीयाबाती (निबन्ध)	....	8–11
3.	हम एक छी (कविता)	....	12–15
4.	टोटमा (कथा)	....	16–23
5.	उद्‌बोधन (कविता)	....	24–26
6.	क्रिकेट (निबन्ध)	....	27–33
7.	राष्ट्रीय एकता (निबन्ध)	....	34–39
8.	मङली मायक बकरी (कथा)	....	40–46
9.	अगहनक भोर (कविता)	....	47–49
10.	मिथिला लोक-चित्र (निबन्ध)	....	50–53
11.	अपना लयमे (कथा)	....	54–61
12.	कुम्हारक चाक (कविता)	....	62–64

जानकी

मिथिलामे बधावा भारी जँह मुदित सकल नरनारी ।।
पृथिवीसौं कन्या एक प्रगटलि रमा समा सुकुमारी ।।
तँह जनक नृपति विज्ञानी आनल गृह कन्या मानी ।।
सकल लोकमे परिपूरित देवि जय जय वानी ।।
उमा सहित बृषकेतू जगदम्बा दर्शन हेतू ।।
अयला तिरहुति महिमा बनथि भव जलनिधिपद सेतू ।।
पद प्रणत 'चन्द्र' कवि गावैं मनमे अति आनन्द पावै ।।
त्राहि-त्राहि जगजननी जानकि अरजी अपन सुनावै ।।

—चन्दा झा

पाठ-सन्दर्भ

एहि कवितामे कवि कहलनि अछि जे पृथ्वीसँ लक्ष्मीसन सुकुमारि कन्या प्रकट भेलीह । एहिसँ सम्पूर्ण मिथिलामे हर्ष व्याप्त अछि । राजा जनक अपन बेटी मानि हुनका घर अनलनि । शंकर-पार्वती सहित सभ देवी-देवता जानकीक दर्शन हेतु तिरहुत अयलाह । कवि सेहो आनन्दित भऽ भावविभोर छथि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) जानकी कतयसँ प्रकट भेलीह ?
   (ii) मिथिलाक लोक किए आनन्दित रहथि ?
   (iii) राजा जनक कन्याकेँ की कयलनि ?
   (iv) देवी-देवतागण किए आ कतय अयलाह ?
2. आशय स्पष्ट करू :
   (i) तँह जनक नृपति विज्ञानी आनल गृह कन्या मानी ।
   (ii) उमा सहित वृषकेतू जगदम्बा दर्शन हेतू ।
3. सही उत्तरमे (√) लगाउ
   (i) जानकीक जन्मसँ समस्त मिथिला उदास अछि ।
   (ii) जानकी पृथ्वीसँ प्रकट भेलीह ।
   (iii) राजा जनक जानकीक परित्याग कऽ देलनि ।
4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :
   (i) तँह ..... नृपति विज्ञानी आनल गृह कन्या मानी ।
   (जनक/जानकी)
   (ii) उमा सहित ..... जगदम्बा दर्शन हेतू ।
   (वृषभ/वृषकेतू)
5. भाषा-बोध
   (i) एहि कवितासँ पाँच संज्ञा शब्दक चयन करू ।

(ii) तीनटा संज्ञा शब्दक विशेषण बनाउ।

शब्दार्थ

बधावा–बधाई, मंगलकामना,

मुदित–प्रसन्न,

नृपति–राजा,

गृह–घर,

बृषकेतू–शिव,

जलनिधि–सागर, समुद्र,

सेतू–पुल,

त्राहि-त्राहि–संकट कालमे,

अरजी– प्रार्थना

सोच-विचार

(i) शिक्षकक सहायतासँ जानकीक संबंधमे विशेष जानकारी प्राप्त कऽ ओहि आधार पर संक्षेपमे लिखि कक्षामे सुनाउ।

(ii) कवितासँ सम्बन्धित चित्र बनाउ।

■

दीयाबाती

दीयाबाती मिथिलेटाक नहि, सम्पूर्ण भारत वर्षक एक महत्वपूर्ण पर्व अछि। एकर प्राचीनता रामराज्यसँ अछि। जखन श्री राम रावण सन राक्षसकेँ संहार कऽ चौदह वर्षक वनवाससँ लक्ष्मण आ जनक नन्दनी जानकीक संग अयोध्या आपस अबैत रहथि तखन हुनकर स्वागतमे घर-बाहर सभ ठाम दीप मालिकासँ सजाओल गेल रहय। ताही दिनसँ दीयाबाती मनयबाक प्रचलन अछि। ओ दिन अछि कातिक मासक अमावश्या। घनघोर अन्धकार पर प्रकाशक ई पाबनि असत्य पर सत्यक आ अनैतिकता पर नैतिकताक विजय-पर्व थिक।

एकर प्राचीनता ओ पौराणिकताक संदर्भ भने जे होइक, मुदा एतेक बात साफ अछि जे सम्पूर्ण भारतवासी लोकनि हेतु दीयाबाती एक नवीनताक संदेश प्रतिवर्ष अनैत अछि। ई कहैत अछि जे असत्य कतबो प्रभावशाली किएक ने हो, मुदा ओकर पराजय

अवश्यम्भावी छैक। विजय सत्येटाक होइत ऐलैक अछि आ होइत रहतैक। ई सत्य अछि, भने समय जे लगैक।

कातिकमास अबिते दीयाबातीक हेतु सभ जाति आ वर्गक लोक अपन-अपन सुविधाक हिसाबसँ तैयारी शुरू कऽ दैत छथि। गरीब-अमीर सभ गोटे एक संग क्रियाशील भऽ जाइत छथि। अपन-अपन घर आँगनक साफ-सफाइ करैत छथि। साल भरिक कूड़ा-कचड़ाकेँ घरसँ बाहर कऽ एकदम चिक्कन-चुनमुन बना दैत छथि। घर-आँगन अयना जकाँ चमचम करऽ लगैत अछि।

बच्चा सभ उत्सुकतासँ दीयाबातीक प्रतीक्षा करैत रहैत अछि। पहिनेसँ बाँसक कोपड़सँ निकलल सुखायल पातकेँ करचीमे गाँथि कऽ रखैत अछि आ दीयाबाती दिन ओकरा जरा कऽ भँजैत अछि। तहिना किछु बच्चा सभ लत्ताक गेन जकाँ बना कऽ तारसँ बान्हि मटिया तेलमे डुबा दैत छथि। ओकरे रातिमे जरा कऽ भँजैत छथि आ उत्साहित भऽ कहैत छथि–हुक्का लोली-लोली ..... 1. उत्साहित बच्चा सभ दीप जरा कऽ घर-आँगन, दूरा-दरबजा पर रखैत अछि। ओकरा सजबैत अछि। रंग-विरंगक फटाका-फुलझड़ी, आलूबम, चटाइबम आदि छोड़ैत छथि। मुदा, एक बात अछि सम्पूर्ण वातावरणमे धुँआ व्याप्त भऽ जाइत अछि। फटाकाक आवाजसँ लगैत अछि जेना कानक पर्दा फाटि जायत। कखनो काल कनेको असावधानी जहाँ भेल कि हाथ-पयर झरकनहि कुशल। तेँ फटाकादिसँ धनक दुरुपयोगक संग-संग ध्वनि आ वायु प्रदूषणक समस्या ठाढ़ भऽ जाइत अछि। बच्चा सभकेँ कमसँ कम फटाका छोड़बाक चाही आ सेहो अपन अभिभावकक देखरेखमे।

दीयाबातीसँ पहिने धन्वन्तरि जयन्ती मनाओल जाइत अछि जकरा धनतेरस कहैत छी। ओहि दिन सभ परिवारमे किछु ने किछु नव बरतन-बासन कीनल जाइत अछि। खाहे एक टा चमचे किए ने मुदा नव बरतन कीनबाक परम्परा पूर्वहिसँ अछि।

दीयाबातीक राति सेठ-साहुकार, कारोबारी-व्यापारी आदि सभक हेतु व्यवसाय शुरू करबाक बहुत पुण्य तिथि होइत छैक। एहि दिन गणेश-लक्ष्मीक पूजा व्यापारी

लोकिन बहुत धूम-धामसँ करैत छथि। व्यवसायी लोकनि पुरना खाता-बही छोड़ि नवीन खाता बहीक शुरुआत शुभ-लाभ लिखि करैत छथि, तांत्रिक लोकनि हेतु सेहो ई दिन बहुत प्रसिद्ध होइत अछि।

भारतवर्षेटामे नहि, पड़ोसी देश नेपाल, पाकिस्तान, बंगला देश आदिमे सेहो दीयाबाती मनाओल जाइत अछि। मॉरीशसमे तऽ भारते जकाँ बहुत धूम-धामसँ दीयाबाती मनाओल जाइत अछि।

आइ काल्हि ई देखबामे अबैत अछि जे वातावरणक साफ-सफाइक दृष्टिकोणसँ सभ धर्म-सम्प्रदायक लोक एकरा मनबैत छथि भने ओकर रूप जे होइक 1 सभ गोटे आपसी भेद भाव बिसरि कऽ एहि उत्सवमे भाग लैत छथि आ खुशी मनबैत छथि। तेँ भारतक प्राय: सभ राज्यमे कोनो ने कोनो रूपेँ दीयाबाती मनाओल जाइत अछि।

पाठ सन्दर्भ :

दीयाबाती भारतवर्षक एक महत्वपूर्ण पर्व थिक जकरा हर्षोल्लासक संग सभ वर्गक लोक मनबैत छथि। घर-आङन साफ-सुथरा कऽ दीप जरबैत छथि। अही अवसर पर व्यापारी वर्ग गणेश-लक्ष्मीक पूजा कऽ व्यापार बृद्धिक कामना करैत छथि। बच्चा लोकनि खूब धूम-धामसँ फुलझड़ी, फटाका छोड़ैत छथि। चारू कात खुशीक वातावरण पसरल रहैत अछि। ओना, वातावरण धुँआ सँ अशुद्ध तऽ भऽ जाइत अछि मुदा घर-आङनक कोने-कोन कूड़ा-कचड़ासँ मुक्त भऽ जाइछ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) **दीयाबाती कोन तिथि आ कोन मासमे मनाओल जाइत अछि ?**
   (ii) **दीयाबातीक तैयारी कोन तरहेँ कयल जाइत अछि ?**
   (iii) **भारतक अतिरिक्त आर कोन-कोन देशमे दीयाबाती मनाओल जाइत अछि ?**
   (iv) **एहि प्रकाश पर्वमे की सभ हानि-लाभ होयबाक सम्भावना रहैत अछि ?**
   (v) **दीयाबाती पावनिसँ की सभ उपदेश भेटैत अछि ?**
   (vi) **प्रस्तुत पाठक आधार पर दीयाबातीक पौराणिक कथा की थिक ? लिखू।**
   (vii) **बच्चा सभ दीयाबातीकेँ कोना मनबैत छथि ?**
   (viii) **दीयाबातीक राति व्यापारी वर्ग की करैत छथि ?**

2. आशय लिखू :

फटाका आदिसँ धनक दुरुपयोगक संग-संग ध्वनि आ वायु प्रदूषणक समस्या ठाढ़ भऽ जाइत अछि। तेँ बच्चा सभकेँ कमसँ कम फटाका छोड़बाक चाही आ सेहो अपन अभिभावकक देख रेखमे

3. सही उत्तरमे सहीक निशान (√) लगाउ

(i) विजय-सत्येक होइत ऐलैक अछि

(ii) गेनकेँ मटिया तेल मे भिजाकऽ जरबैत छथि

(iii) फटाका आदिसँ धनक सदुपयोग होइत अछि

(iv) मॉरीशसमे भारते जकाँ बहुत धूम-धामसँ दीयाबाती मनाओल जाइत अछि।

4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) फटाकाक ..... सँ कानक पर्दा फाटि जाइत अछि।

(ii) ..... लोकनि हेतु ई दिन बहुत प्रसिद्ध होइछ।

(iii) सम्पूर्ण वातावरणमे .....भऽ जाइत अछि।

(iv) नवीन खाता-बहीक शुरुआत ..... लिखि करैत छथि।

भाषा-बोध

1. प्राचीनता, पौराणिकता, उत्सुकता, नैतिकता, नवीनता कोन तरहक संज्ञा थिक ?

सोच-विचार

दीयाबातीए जकाँ आन कोनो पर्वक पौराणिक कथाक सम्बन्धमे शिक्षकक सहायतासँ वर्गमे चर्चा करू।

शब्दार्थ :

पराजय–हारब

धूम-धामसँ–प्रफुल्लित मोनसँ, बाजा–गाजाक संग

दीपमालिका–दीपक समूह

■

हम एक छी

आइ भारत-भारती सम्पूर्ण
भारतवर्ष भरिमे
भरि रहल अछि भावना,
हम एक छी, हम एक छी।

बाग जे काश्मीरसँ कन्या-
कुमारी धरि फुलल अछि,
वास जे मणिपुरसँ सौराष्ट्र
धरि हमरा मिलल अछि।
कऽ रहल अछि घोषणा,
हम एक छी, हम एक छी॥

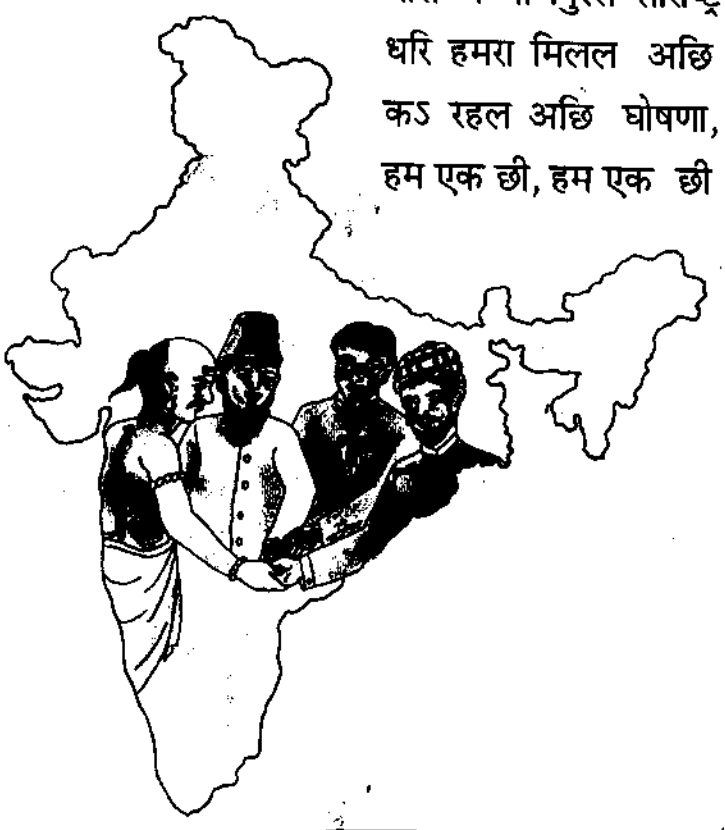

देवता नगराज उत्तरमे
जकर प्रहरी बिराजय,
सिन्धु तीनू कातसँ गौरव-
कथा कविता सुनाबय।
सौम्य-समता-साधना
हम एक छी, हम एक छी ।।

फूल जे हो रंग-रूपक
एक गजरामे गुँथल छी।
सात सुर-लय-ताल बान्हल,
रागिनी रसमे पगल छी ।।
कवि करै अछि कल्पना,
हम एक छी, हम एक छी।

–आरसी प्रसाद सिंह

पाठ सन्दर्भ :

सम्पूर्ण राष्ट्र एकताक एक सूत्रमे आंइ बान्हल अछि। जेना कोनो एक मालामे विभिन रंग-रूपक फूल एकटा सूतमे बान्हल रहैत अछि तहिना भारतमे बसनिहार विभिन्न धर्म, जाति, रूप-रंगक लोक राष्ट्रीयताक नामसँ एक छथि। काश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि आ मणिपुरसँ सौराष्ट्र धरि, हम सभ एक छी। अनेकतामे एकता सौंसे भारतवर्ष मे अछि। राष्ट्रीयताक रक्षाक लेल चारू दिशामे प्रहरी सदृश हिमालय आ सिन्धु विराजमान अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) सम्पूर्ण राष्ट्रमे कोन तरहक भावना भरल अछि ?
   (ii) पूबसँ पश्चिम आ उत्तरसँ दक्षिण की घोषणा कऽ रहल अछि ?
   (iii) कवि भारतवर्षक रक्षार्थ प्रहरीक रूपमे कथीक चित्रण कयलनि अछि ?
   (iv) हम एक छी-कोना ?
2. आशय लिखू :
   (i) भरि रहल अछि भावना
   हम एक छी, हम एक छी
   (ii) कऽ रहल अछि घोषणा
   हम एक छी हम एक छी
3. सही उत्तरमे (√) लगाउ :
   (i) हम एक छीक भावना सम्पूर्ण भारतवर्षमे भरल अछि।
   (ii) भारतवर्षक रक्षाक हेतु प्रहरी सदृश चारू कातसँ सिन्धु विराजमान अछि।
4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :
   (i) भरि रहल ..... भावना
   (ii) सिन्धु ..... कातसँ गौरव
5. भाषा बोध :

शब्दार्थ :

नगराज–हिमालय

सिन्धु–समुद्र

सौम्य–शान्त, सुन्दर

गजरा–फूलक मोटगर माला

(i) निम्नांकित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य बनाउ:

कान काटब, लंक लागब, हाथ पसारब, छाती फाटब।

(ii) क्रियाविशेषणक भेद सोदाहरण लिखू :

6. सोच-विचार

(I) भारतवर्षमे अनेकतामे एकता अछि–कक्षामे एहि विषय पर विमर्श करू।

(II) हम एक छी–एहन राष्ट्रीय भावनाक दोसरो कविता सभ ताकि कऽ पढ़ू।

(III) राष्ट्रीयतासँ सम्बन्धित एकटा एकांकीक मंचन वर्गमे करू।

■

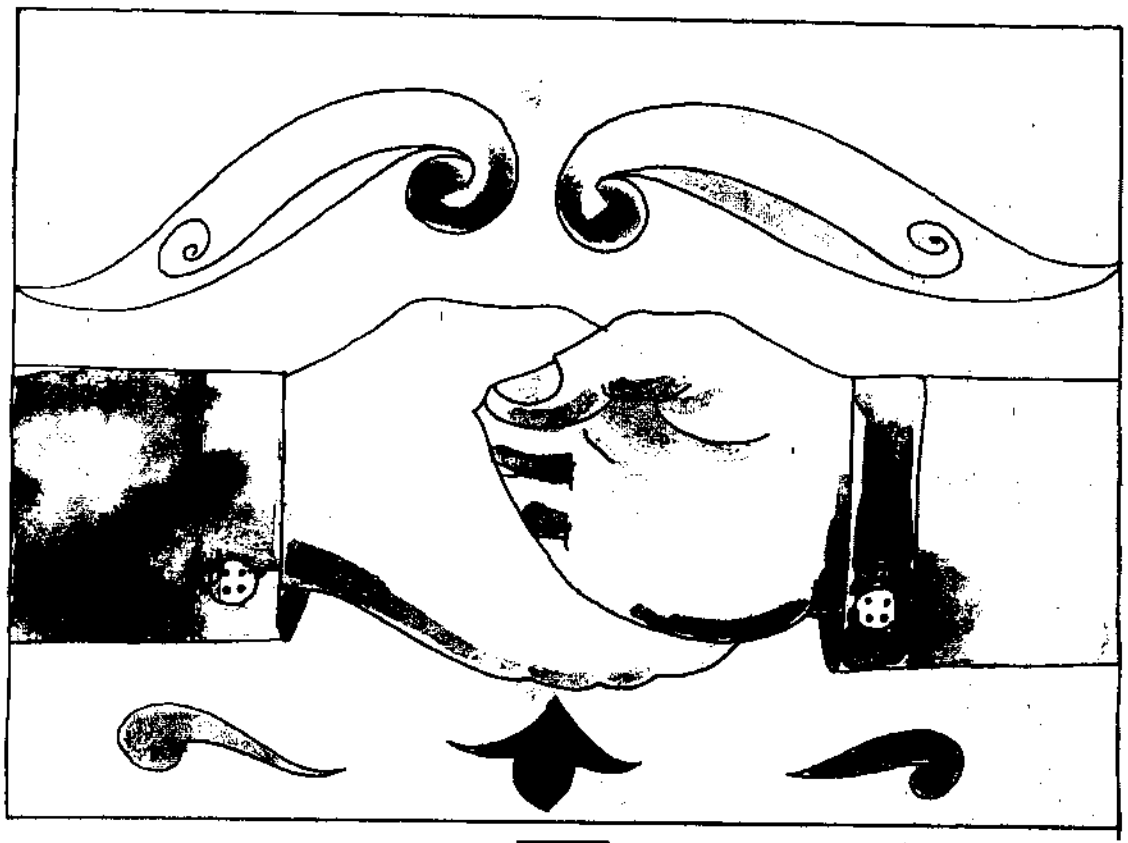

टोटमा

बहुत दिनपर परदेशसँ चल अबैत रही। घरक हाल-चाल बुझना सात वर्ष भऽ गेल रहय। बुझितहुँ कोना ? चिट्ठी-पत्री होइत तखन ने ? परन्तु हम त रूसल रही। कहाँ-कहाँ घुमलहुँ रुपैयाक हेतु—जमशेदपुर, कलकत्ता, रंगून। आओर सात घाटक पानि पीबि आइ पुनः देश जा रहल छी। जहाँ नूनूकका छथि, भाइ छथि, भौजी छथि, मुन्ना अछि। सभक लेल सनेस नेने जाइत छिऐन्ह। मुन्ना मोटर देखितहि नाचय लागत। भौजीकेँ साड़ीक कोर खूब पसिन्द पड़तैन्ह। भाई ओ नूनूकाकाक आगाँ रुपैयाक मोटरी पटकि देबैन्ह। जे 'लियऽ आब भेल ? एही खातिर दिन-राति महाभारत मचैत छल। आब त खुशी भेलहुँ !' पहिने लिखि देने रहितिऐन्ह त स्टेशनपर घोड़ी अबैत। आब एकाएक हमरा देखि कऽ सभ गोटे अकचकाइ जैताह !

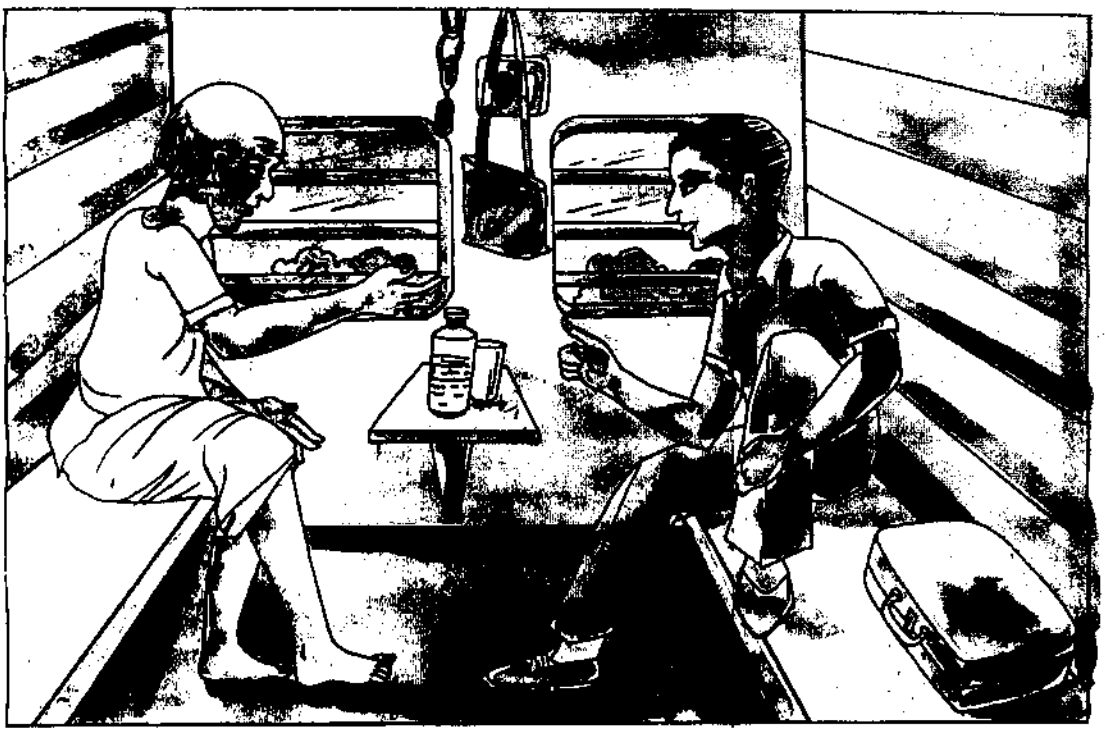

यैह सभ सोचैत, मनमे नाना प्रकारक भावना करैत चल अबैत छलहुँ। जखन ट्रेन बरौनी पहुँचल त मातृभूमिकेँ मनहिमन वन्दना कऽ कहल-आब भगवानक इच्छा हैतैन्ह त एके पहरमे अहाँक दर्शन भऽ जायत। एहि सात वर्षमे नहि जानि की-की परिवर्तन भेल हैत ? गामपर के कोना अछि ? कोनो गौआँसँ भेंट भऽ जाइत त सभटा हाल-चाल बुझि जैतहुँ।

हम यैह सोचैत छलहुँ कि देखाइ पड़लाह घूटर कका-झोरी, कम्बल ओ गङ्गाजलक सुराही हाथमे नेने, प्लेटफार्मपर दौड़ैत ! जेना कोनो निधि भेटि गेल हो, तहिना प्रसन्नता भेल। खिड़कीसँ माथ बाहर कऽ सोर कैलिऐन्हि-'घूटर कका !'

घूटर कका हमरा देखि चकित भऽ गेलाह - 'के ? श्रीकान्त ? हौ, तों कतयसँ ? इह। कतेक दिन पर तों ऊपर भेलाह ? एना केओ घर-द्वार छोड़ैत अछि ?

हम प्रेमपूर्वक हुनक चरण-धूलि लऽ अपना लग बैसा कऽ पुछलिऐन्ह-कहू घूटर कका, सभ कुशल-मंगल छैक ?

घूटर कका बजलाह - बड़ बढ़ियाँ। तों अपन कहह, कोना छलाह ? एकटा चिट्ठिओ-पत्री त कहियो दितहुन।

हम बात बदलैत कहलिएन्हि - एखन कहाँसँ आबि रहल छिऐक ?

घूटर कका बजलाह - सिमरियाघाट गेल छलहुँ। गङ्गाजल लेबक हेतु।

हम-कहू, घूटर कका, बैदगीरी खूब चलैत अछि कि नहि ?

घूटर -देहातमे की चलत ? केओ कि दाम खर्च करऽ चाहैत अछि ?

ई कहैत घूटर कका हमरा दिस गंभीर दृष्टिसँ तकलैन्ह। जेना कोनो बात लक्ष्य करैत होथि। पुनः दोसरा दिस ताकि एक दीर्घ निःश्वास छोड़लन्हि।

हमरा हृदयमे धुकधुक्की होमय लागल - रे बाप ! की बात छैक ?

पुछलिऐन्ह - घूटर कका, हमरा ओहि ठाम सभ लोक निकेँ अछि कि ने ? कोनो अनिष्ट घटना त नहि भेलैक अछि ?

घूटर कका बटुआसँ तमाकू बाहर करैत बजलाह - अहाँक घोड़ी मरि गेल।

हम - अहा ! घोड़ी मरि गेल ? हम कहैत छलहुँ जे एहि बेर गाम जायब त ओहिपर खूब बूलब । कोना मुइलैक ?

घूटर. - दलानक पछुअतिमे बान्हल रहय । जखन दलानमे आगि लगलैक त ओही संग ओहो जरि गेल ।

हम - आहि रौ बाप ! हमर दलानो जरि गेल ? से कोना ?

घूटर. - जखन घरमे आगि लागल त दलानोमे धऽ लेलकैक । जा लोक मिझाबय-मिझाबय ता साफ भऽ गेलैक । रातिक समय रहै कि ने !

शंकित चित्तसँ पुछलिएन्ह - कोनो लोक त नहि नोकसान भेलैक ?

घूटर. - नहि । लोक नहि जरल । किएक त .....

हम फक दऽ निसास छोड़ल । खैर, लोक त बाँचल । चीज-वस्तु जान बचतै त फेर भऽ जेतैक । परन्तु जौं मुन्ना ..... । ई सोचैत देह सिहरि उठल । पुछलिऐन्ह - की ? ई आगि कोना लगलैक ?

घूटर कका बजलाह - अहाँक नूनूककाक एकादशाह दिन जे दूध औंटल गेलैन्ह तकरे आगि .....

ई सुनैत हमरा आँखिक आगाँ अन्हार भऽ गेल । ऐं ! आब नूनूककाकेँ नहि देखबैन्ह । हे भगवान ! हम केहन पापी भेलहुँ !

हमरा आँखि पोछैत देखि घूटर कका बजलाह - एना केओ अधीर होअए ? जन्म-मरण त लोककेँ लागले रहैत छैक । एहि संसारमे केओ जीबय आयल अछि ?

हम हिचकैत-हिचकैत पुछलिऐन्ह - हुनका की भेल छलैन्हि ?

घूटर - कोनो तेहन रोग-व्याधि त नहि छलैन्हि । अहाँक भौजीक एकोदिष्ट कयने रहथि, ताहि दिन पेटमे दर्द उठलैन्ह जे .....

हाय ! हाय ! भौजी पहिनहि बिदा भऽ गेलीह ! आब बैगनी कोरक ओ साड़ी के पहिरत ?

हम फफकि-फफकि कऽ कानय लगलहुँ। घूटर कका चुप करैत बजलाह – एना केओ बताह होअए ? ओ लक्ष्मी छलीहि। चलि गेलीह। जे दिन जिबितथि से त कष्टे होइतैन्हि !

हमरा मुँहपर विस्मयबोधक चिह्न देखि घूटर कका बजलाह – ओ तँ जहियेसँ विधवा भेलीह तहियेसँ .....

आहि रौ बा ! भैयो नहि रहलाह ! हम पुक्की पाड़ि कानय लगलहुँ। भैया-भौजी दुनू विदा भऽ गेलीह ! आ मुन्नाकेँ के रखने हैतैक ? कोना हैत ?

बड़ीकाल धरि नोर-झोरक आवेशसँ बाजि नहि सकलहुँ। ओम्हर घूटर कका निर्विकार भावसँ तमाकू चुनबैत रहलाह। कतेक कालपर कोनहुना घबड़ाएल कंठसँ पुछलिऐन्ह - मुन्ना कोना अछि ?

घूटर कका ठोरमे तमाकू रखैत बजलाह - ओकरे शोकमे त अहाँक भाय मुइलाह। कोना ने होउन्ह ? ने खैनाइ ने पिनाइ .....

हम निष्पन्द रहि गेलहुँ। जे अन्तिम बन्धन छल सेहो टुटि गेल। भैया, भौजी, नूनूकका, मुन्ना सभ समाप्त। आब ककरा खातिर गाम जाउ ? आओर जा कऽ की देखब ? संसारे उजड़ि गेल ! ने ओ राम ने ओ अयोध्या ! आब के मोटर पाबि नाचत ? के साड़ी देखि कऽ खुशी हैत। ककरापर स्नेहक अभिमान करबैक ?

तावत गामक स्टेशन पहुँचि गेल - समस्तीपुर जंक्शन। हम छातीकेँ वज्र कऽ कऽ बजलहुँ – घूटर कका, हम त आब सोझे हरिद्वार जायब। संन्यासीकेँ रुपैया-पैसासँ कोन काज ? अहाँ ई मोटरी लऽ लियऽ और साले-साले हुनका लोकनिक निमित्त ब्राह्मण-भोजन करा देल करबैन्ह।

घूटर कका पुनः हमरा दिस गम्भीर दृष्टिसँ तकलनि। जेना किछु लक्ष्य करैत होथि। पुनः बजलाह - हँ, ठीक। आब उतरह।

हम अनुरोध करैत कहलिऐन्ह - अहाँकेँ एको रती दया नहि होइत अछि ? हमर घर उजड़ि गेल, निर्वंश भऽ गेलहुँ आओर अहाँक लेखे धन सन ! जाउ, हमर जे डीह-डाबर अछि से अहीं जोति कऽ खाएब ।

परन्तु घूटर ककापर एक रत्ती प्रभाव नहि पड़लैन्ह । ओ तमाकूक सिट्ठी फेकैत हमरा हाथ धऽ नीचा उतारय लगलाह । हम हाथ झाड़ैत कहलिऐन्ह - देखू घूटर कका ! हम कहि दैत छी ! जबरदस्ती नहि करू । हम अपना होशमे नहि छी ।

घूटर कका बजलाह - तों वैह श्रीकान्त रहि गेलाह । एखन धरि नेनमति नहि छुटलौह अछि । तोहर घर-द्वार लोक-बेद सभ ओहिना अनामति छौह । चलह, उतरह । हम कहलिऐन्ह - घूटर कका ! परतारू जुनि । आब हम बच्चा नहि छी ।

घूटर. - तोरा विश्वास नहि होइत छौह त चलि कऽ देखि लैह ।

हम - त मुन्ना जीबिते अछि ?

घूटर. - हँ ।

हम - आओर भैया ?

घूटर. - ओहो ।

हम - भौजी ?

घूटर. - ओहो ।

हम - आ, नूनूकका ?

घूटर. - खूब मस्त छथुन्ह ।

हम - और घर ?

घूटर. - ओहो बाँचल छौह ।

हम - तखन दलानो नहि जरल ?

घूटर. - नहि ।

हम - आओर घोड़ी ?

घूटर. - खूब हिनहिनाइत छौह ।

हम - तखन अहाँ एतेक बना कऽ किऐक कहलहुँ ?

घूटर. - हौ ! बरौनीमे हम देखल जे तोरा हिचकी उठल छौह । ओना बन्द नहि होइतौह । तैँ हम एतेक काल धरि तेहने-तेहन बात कहैत ऐलिऔह जाहिसँ खूब आतंक भऽ जाओ । ई हिचकीक टोटमा थिकैक । देखै छह नहि, आब हिचकी कहाँ गेलौह ?

हमरा फक्क दऽ प्राण आएल । घूटर ककाक पैर पर खसैत कहलिऐन्ह–धन्य छी महाराज ! हमर प्राण छुटैत छल आओर अहाँ टोटमा करैत छलहुँ । तेहन चिकित्सा करय लगलहुँ जे हमर प्राणे जाय लागल ! बाप-रे-बाप ! ओतेक अशुभ बात सभ कोना फुरल ? हमरा त एखन धरि देह काँपि रहल अछि ।

घूटर. - की करबहक ? हुनका लोकनिक आयुर्दा आओर बढ़ि गेलनि । हिचकीक 'टोटमा' एहिना होइत छैक ।

–हरिमोहन झा

पाठ-सन्दर्भ

जाहि व्यक्ति केँ हिचकी होइत छनि तऽ ओहिदिस सँ हुनक ध्यान हटयबाक लेल हुनका पर मिथ्यारोप लगाओल जाइत अछि जाहिसँ हुनक ध्यान बँटि जाइत अछि आ हिचकी छुटि जाइत अछि । एहन कार्य केँ टोटमा कहल जाइत अछि । श्रीकान्त सात बरस पर परदेशसँ घुमि घर अबैत छथि । बरौनी मे घुटरकका भेंट होइत छथिन्ह । ओ श्रीकान्तकेँ हिचकी होइत देखलनि तेँ हुनक हिचकी छोड़यबाक लेल घुटरकका सभटा मिथ्या मुदा मनोरंजनपूर्वक समाद कहैत छथिन्ह जाहिसँ श्रीकान्त घबरा जाइत छथि । हुनक हिचकी बन्द भऽ जाइत छनि मुदा जखन बुझैत छथि जे ई सभ फूसि समाचार छल तऽ हुनक मोन शान्त होइत छनि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) श्रीकान्त कतेक दिनक बाद परदेशसँ गाम आबि रहल छलाह ?
   (ii) गाम अबैत काल श्रीकान्तक मोनमे कोन तरहक भावना आबि रहल छलनि ?
   (iii) श्रीकान्तकेँ बरौनीमे ट्रेनमे सभसँ पहिने किनकासँ भेंट भेलनि ?
   (iv) घूटरकका कतऽसँ आ की लऽ आबि रहल छलाह ?
   (v) घूटरकका श्रीकान्तकेँ कोन समाचार सुनौलथिन ?
   (vi) घूटरककाक गप्प पर श्रीकान्तक मोनमे कोन विचार उठलनि ?
   (vii) घूटरकका श्रीकान्तकेँ एहन फूसि समाचार किएक सुनौलथिन ?
2. आशय स्पष्ट करू

   जखन ट्रेन बरौनी पहुँचल त मातृभूमिकेँ मनहिमन बन्दना कऽ कहल–आब भगवानक इच्छा हेतनि त एके पहरमे अहाँक दर्शन भऽ जायत । एहि सात वर्षमे नहि जानि की की परिवर्त्तन भेल हैत ?
3. सही उत्तरमे सहीक निशान (√) लगाउ ।
   (i) आब एकाएक हमरा देखि कऽ सभ गोटे अकचकाइ जैताह ।
   (ii) एहि सात वर्षमे नहि जानि की-की परिवर्त्तन भेल हैत ।
   (iii) मुन्ना मोटर देखितहि दौड़ऽ लागत ।
   (iv) एखन धरि नेनमति नहि छुटलौह अछि ।
   (v) पहिने लिखि देने रहितियनि तऽ स्टेशन पर घोड़ी अबैत ।
4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :
   (i) जखन ट्रेन बरौनी पहुँचल तऽ ..... मनहिमन बन्दना कऽ कहल ..... हैतनि तऽ एके पहरमे अहाँक ..... भऽ जायत ।
   (ii) हम यैह सोचैत छलहुँ कि देखाइ पड़लाह .....
   (iii) देहातमे की चलत ? केओ कि ..... खर्च करऽ चाहैत अछि ?
   (iv) पुनः दोसरा दिस ताकि एक दीर्घ ..... छोड़लनि ।
   (v) हमरा हृदयमे होमय ..... लागल ।

(vi) हौ ! बरौनीमे हम देखल जे तोरा उठल ..... छौह ।

(vii) हमरा प्राण छुटैत छल आओर अहाँ ..... करैत छलहुँ ।

(viii) हिचकीक ..... एहिना होइत छैक ।

भाषा-बोध–

1. पाठमे प्रयुक्त संज्ञा शब्द लिखू ।
2. पाठमे प्रयुक्त सर्वनाम कें चुनि कऽ लिखू ।

सोच-विचार

सोचू जे हिचुकी छोड़यबाक लेल कोन तरहक उपचार मिथिलामे प्रसिद्ध अछि ।

शब्दार्थ :

निधि–धन, सम्पत्ति

नाना प्रकारक–बहुत प्रकारक

दीर्घ–पैघ

अनिष्ट–खराब

व्याधि-रोग, दुख

प्रसन्नता–खुशी ।

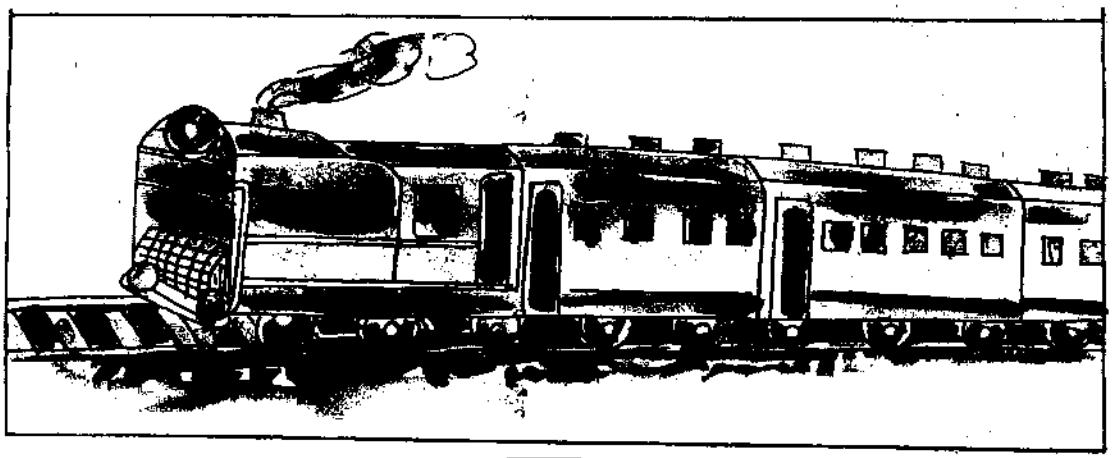

उद्‌बोधन

आउजी बाउजी ! खाउ पीबू अहाँ
शक्ति सम्पन्न भऽ दीर्घ जीबू अहाँ।

जँ चाहै छी अहाँ लोकमे नाम हो
तँ करू काज से जे बिना दाम हो।

ध्यान देने सदा काज ओ काल पर
दृष्टि राखू स्वयं माल ओ जाल पर।

नौकरी जौं करी तौं करू प्रेम सौं
स्वामि सेवा निबाहू सदा नेम सौं।

लोभ ओ क्रोध कैं दूर राखू अहाँ
शत्रुओ सँ कथा मीठ भाखू अहाँ।

मानि निश्छल यथाशक्ति सेवा करू
त्यागि दुःसङ्ग सन्मार्ग बौआ धरू।

काल खेपू सदा मैथिली चर्च सौं
लोकमे कीर्ति होयत बिना खर्च सौं।

धै चली जँ अहाँ ऐ सदादेश कैं
तँ सुखी कै सकै छी सदा देश कैं।

—सीताराम झा

पाठ सन्दर्भ :

कवि एहि कवितामे सदाचारी जीवन जीबाक लेल संदेश देलनि अछि। यशस्वी बनबाक लेल बिना कोनो लोभक काज करबाक चाही। समयक हमेशा ध्यान राखक चाही। लोभ आ क्रोधसँ बचैत शत्रुसँ सेहो प्रेम भाव रखबाक चाही। सभ व्यक्तिसँ आत्मीय संबंध रखैत, नीक मार्ग पर चलैत आ मातृभाषा मैथिलीक चर्चा करैत समय बितौलासँ प्रतिष्ठा मे वृद्धि होयत। एहि प्रकारक आचरण कयलासँ देश सुखी सम्पन्न होयत।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) **दीर्घजीवी होयबा लेल की आवश्यक होइछ ?**
   (ii) **नौकरी करैत मालिकसँ केहन सम्बन्ध रखबाक चाही ?**
   (iii) **शत्रुसँ केहन वचनक प्रयोग करबाक चाही।**
   (iv) **मैथिलीक चर्चा कयलासँ की होयत ?**
2. आशय स्पष्ट करू।
   मानि निश्छल यथाशक्ति सेवा करू
   त्यागि दुःसङ्ग सन्मार्ग बौआ धरू।
3. सही उत्तर मे (√) लगाउ।
   (i) **दोसराक धन पर नजरि नहि गड़यबाक चाही।**
   (ii) **शत्रु सँ कटु वचन बजबाक चाही।**
   (iii) **सदैव सन्मार्ग पर चलब उचित नहि।**
4. **पद्यांशक अगिला पाँती लिखू।**
   (i) **जँ चाहै छी अहाँ लोकमे नाम हो**
   ..... ।
   (ii) **काल खेपू सदा मैथिली चर्च सौं**
   ..... ।

5. भाषा-बोध

शब्दार्थ

दीर्घ = नमहर,	दाम = मूल्य
दृष्टि = नजरि,	माल ओ जाल = पोसुआ पशु, यथा गाय
स्वामि = मालिक,	नेम = नियम
कथा = गप्प-सप्प	भाखब = बाजब
दारा = स्त्री, पत्नी	अङ्ग = शरीर
निश्छल = साफ	दुःसङ्ग = खराब लोकक संग
सन्मार्ग = नीक रास्ता	कीर्ति = यश

(i) पीबू-जीबू; नाम-दाम, कवितामे सँ एहि प्रकारक शब्द-जोड़ाक चयन करू।

(ii) विपरीतार्थक शब्द लिखू

दीर्घ, लोक, प्रेम, मीठ, सुखी।

6. सोच-विचार

कविताकेँ रटिकऽ सस्वर पाठ करू।

■

क्रिकेट

क्रिकेट सम्प्रति विश्वक सर्वाधिक लोकप्रिय खेल अछि। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एहि खेलक प्रचलन अछि। गाम-शहर-जिला-प्रान्तसँ लऽ कऽ विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्द्धा शृंखलाक आयोजन एहि खेलमे भऽ रहल अछि। खेलक मैदानसँ लऽ कऽ घर पर्यन्तमे टेलिवीजन-रेडियो पर एहि खेलक प्रत्यक्ष विवरण देखबा-सुनबाक हेतु लोकक भीड़ लागल रहैत अछि। देश-विदेशक नामी-गरामी खेलाड़ी सभक नाम चेतनक कोन कथा, बच्चो सभक जीह पर लिखल अछि।

सभ जनैत अछि जे क्रिकेट दुनियाँक अधिकांश देशमे खेलल जाइत अछि, मुदा कहियासँ खेलल जाइत अछि आ कोन देश मे एकर जन्म भेल सेहो जानब आवश्यक अछि। क्रिकेटसँ मिलैत-जुलैत गुल्ली-डंटाक खेल भारतक गाम-घरमे बड़ प्राचीन कालसँ प्रचलित अछि। क्रिकेटक निश्चित तिथि अथवा सालक उल्लेख तऽ कतहु नहि अछि मुदा इंगलैण्डक हैम्बलडन प्रदेशक हैम्पशायर नामक स्थानमे सोलहम् शताब्दीक मध्यभागमे ई खेल खेलल जयबाक उल्लेख भेटैत अछि। ओहि क्षेत्रक खेतिहर सभ प्रत्येक रवि दिन मनोरंजनार्थ सामूहिक रूपेँ एहि खेलक आयोजन करैत छलाह। आरम्भमे ओ सभ हॉकीक बैट जकाँ कम चाकर लकड़ीक बैट ओ रबड़क गेनसँ खेलाइत छलाह, आ कान्हसँ ऊपर हाथ बिना घुमओनहि गेन फेकैत छलाह। खेलयबाक कोनो निश्चित नियमो नहि बनओने रहथि। क्रमशः ई खेल राज परिवारक ध्यान आकृष्ट कयलक आ इंगलैण्डक राजा एडवर्ड प्रथमक राजकुमार ई खेल खेलायब आरम्भ कयलिन। शनैः शनैः विलायतक सम्भ्रान्त समाजमे एकर प्रचार प्रसार भेल। 1649 ई० मे चार्ल्स प्रथमकेँ फाँसीक सजाय भेटल। सामाजिक वातावरणमे हलचल आबि गेल। फलतः किछु समयक हेतु खेल पर रोक लागि गेल। मुदा पुनः 1660 ई० मे चार्ल्स द्वितीय एहि खेलकेँ प्रश्रय देलनि। 1700 ई० क आसपास दू प्रतिपक्षी दलमे एहि खेलक मैच खेलल जयबाक उल्लेख भेटैत अछि।

ड्यूक ऑफ रिकमाण्ड (रिकमाण्डक जमीन्दार) सभसँ पहिने 1727 ई० मे एहि खेलक किछु नियम बनओलनि। 1744 ई० मे ओहि नियममे किछु सुधार कयल गेल। पुनः 1774 ई० मे डारसेटक जमीन्दार ओ अन्य अनेको जमीन्दारक एकटा समिति एहि खेलक विस्तृत नियमावली तैयार कयलनि। दुनू भागक वीकेटक दूरी, वैटक चौड़ाई बल्लेबाजक स्थान (क्रीज) ओ वीकेटक सामने पाएरमे गेंद लगने आउट (खेलसँ बाहर) होयबाक नियम (एल० बी० डब्ल्यू०) ई समिति बनओलक। सर विलियम डैपर एहि समितिक अध्यक्ष छलाह।

ईंगलैण्डक ई खेल क्रमशः आनो देशक खेलप्रेमीक ध्यान आकृष्ट कयलक। ओहि-समयमे भारतमे अंग्रेजी शासन छल। अतः भारतीय अंग्रेज लोकनि सर्वप्रथम 1792 ई० मे कलकत्तामे एकटा क्रिकेट-क्लबक स्थापना कयलनि। 1804 ई० मे आस्ट्रेलियामे, 1806 ई० मे वेस्ट इण्डीजमे, 1808 ई० मे दक्षिणी अफ्रिकामे तथा 1832 ई० मे न्यूजीलैण्डमे क्रिकेट-क्लबक स्थापनाक उल्लेख एसली ब्राउन महोदय अपन पुस्तक 'दि पिक्टेरियल हिस्ट्री ऑफ क्रिकेट' मे कएने छथि। 1845 ई० मे 'मेलबॉर्न क्रिकेट क्लब' (एम०सी०सी०) क स्थापना आस्ट्रेलियमे भेल।

भारतमे पारसी समुदायक लोक आरम्भमे एहि खेलमे बेसी अभिरुचि रखलनि। बम्बई स्थित पारसी व्यापारी एवं सम्भ्रान्त परिवारक एक क्रिकेट-दल सर्वप्रथम 1886 ई० मे ईंगलैण्डक क्रिकेट दलक संग मैच खेलयबाक हेतु ईंगलैण्ड गेल। ईंगलैण्डक क्रिकेट दलक भारतमे प्रथम आगमन 1889 ई० मे भेल। पहिल भारतीय कुमार रणजीत सिंहजी (नवनगरक राजकुमार जे रणजी क नामसँ ख्याति रहथि आ जनिका नाम पर पटियालाक महाराज द्वारा चलाओल 'रणजी ट्रॉपी' प्रतियोगिता क्रिकेट जगत में प्रसिद्ध अछि) जे कैम्बिज विश्वविद्यालयक छात्र छलाह, मैनचेस्टरमे खेलायल अपन पहिल मैचक पहिल पारीमे 62 ओ दोसर पारी मे 154 रन बनाय बिना आउट भेनहि खेल समाप्त कयने रहथि। ईंगलैण्डक दलक संग खेलाईत रणजीत सिंहजी 1900 ई० केर क्रिकेट सत्रमे तीन हजार रन बनओने रहथि। हुनक रन बनयबाक दर 55 रन प्रति घंटा छल।

भारतमे क्रिकेटक लोकप्रियता गाम-गाम धरि पसरल अछि। आब तऽ नवयुवके टा नहि, नवयुवती लोकनि सेहो क्रिकेट खेलाइत छथि। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं अन्तर्विश्वविद्यालय स्तर पर पुरुष एवं महिला दुनू वर्गक हेतु प्रतिस्पर्द्धा होइत अछि। क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेको प्रतिस्पर्द्धा होइत अछि। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित भेनिहार प्रमुख प्रतिस्पर्द्धा अछि—मोइनुद्दोला स्वर्ण कप, दलिप ट्रॉफी, रणजी ट्रॉफी, इरानी ट्रॉफी, शीश महल ट्रॉफी, एवं बज्जी ट्रॉफी। क्षेत्रीय स्तरक किछु प्रमुख प्रतियोगिता अछि—सी०के० नायडू ट्रॉफी, कूच बिहार ट्रॉफी,

जी० डी० बिड़ला ट्रॉफी, जवाहरलाल नेहरू ट्रॉफी, मर्चेन्ट ट्रॉफी, विजय हजारे ट्रॉफी, एवं विल्स ट्रॉफी। अन्तर्विश्वविद्यालय स्तर पर "रॉहिण्टन बेरिया ट्रॉफी, प्रसिद्ध अछि।

निम्नलिखित भारतीय क्रिकेट खेलाड़ीक नामक उल्लेख बड़ आदरक संग कयल जाइत अछि—कुमार रणजीत सिंह, सरदेसाई, विजय मर्चेण्ट, विजय हजारे, पॉली उम्रिगर, पटौदी, मंकद, चन्द्रशेखर, विशन सिंह बेदी, सुनील गावस्कर, कपिलदेव, अजहरूद्दीन, सचिन तेन्दुलकर, रवि शास्त्री, सौरभ गांगुली, राहुल द्रविड़, महेन्द्र सिंह धोनी (माही) आदि।

भारतक अतिरिक्त विश्व स्तर पर इंगलैण्ड, आस्ट्रेलिया, वेस्ट इण्डीज, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रिका, श्रीलंका, न्यूजीलैण्ड, बंगला देश आदि देशक नाम विशेष रूपेँ उल्लेख्य अछि जतय क्रिकेट खेलक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। आस्ट्रेलियाक फ्रेड्रिक रॉबर्ट स्पॉफोर्थ, विलियम विली मरडॉक, एस० ई० ग्रेगरी, रिची रिचर्ड, ग्रेग चैपेल, सर डोनाल्ड ब्रैडमैन, आर्मस्ट्राँग, सी० मेकॉर्टनी आदिक नाम क्रिकेट जगतमे ख्यात अछि। केओ क्रिकेट प्रमी ईंगलैण्डक डब्ल्यू० जी० ग्रेस, सी०बी० फ्राइ, जैक्सन, लेन हट्टन, इयान बॉथम, कॉलिन काउड्रे आदिक नाम नहि बिसरि सकैत छथि। आ तहिना वेस्ट इण्डीजक व्ही० रिचार्ड्स, सी० ल्वॉड, एम० मॉर्शल, जी सॉवर्स, तथा पाकिस्तानक हनीफ मोहम्मद, इमरान खाँ, मीयाँदाद ओ वसीम अकरमक नामक उल्लेख कयने बिना क्रिकेटक आइ धरिक इतिहास अपूर्ण रहत।

क्रिकेटक नियमावालीमे समय-समय पर थोड़-बहुत हेराफेरी होइत रहल अछि, मुदा मुख्य नियम यथावत् रहल अछि। 1970 ई० सँ निश्चित ओवरक एक-दिना मैचक नव परिपाटी भेल अछि जे मात्र एक पारीक मैच होइत अछि। दू पारीवला मैच जे आरम्भमे तीन-दिना होइत छल से पँचदिना भऽ गेल, जे टेस्टमैच कहल जाइत अछि जे एखनहुँ प्रचलित अछि। समयाभावक कारणे अथवा कही जे अत्याधुनिक परिपाटीमे एक गोट नव तरहक खेल बनाओल गेल 20-20 ओवरक मैच। 20-20 ओवरक मैच, माहीक कप्तानीमे विश्व चैम्पियन बनि चुकल अछि। आब रातुक बिजलीक प्रकाशमे मैच खेलयबाक नव प्रथा भेल अछि। रातुक खेलमे रंगीन कमीज वा गंजी पहिरबाक

नियम अछि। कोनो निर्णयमे संशयक निराकरणक हेतु सवतोभावेन अधिकार अम्पायरक हाथमे सुरक्षित रहैत छनि।

विदेशी खेल होइतहुँ भारतमे क्रिकेटक विकास विश्वक कोनो देशसँ कम नहि भेल अछि। विश्वक चौदह गोट क्रिकेटक आदर्श मैदानमे सँ आठ गोट मैदान भारतमे अछि, यथा–ब्रेबोर्न एवं वैंखेड स्टेडियम (बम्बई), फिरोजशाह कोटला मैदान एवं नेहरू स्टेडियम (दिल्ली), चेपाक मैदान एवं नेहरू स्टेडियम (मद्रास), इडेन गार्डेन (कलकत्ता) एवं ग्रीन पार्क (कानपुर) शेष छओ टामे सँ चारिटा इंगलैण्डमे (लीड्स, लॉर्ड्स, ओल्ड ट्रैफोर्ड एवं ओवल), एक-एकटा आस्ट्रेलिया (मेलवॉर्न) तथा ऑकलैण्डमे (ईडेन पार्क)।

भारतमे राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेटक संचालन एवं व्यवस्थापक भार क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड' पर अछि। शिक्षण संस्थानमे नामांकनक सुविधा, प्रशिक्षणक हेतु वित्तीय सहायता, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर नीक खेल-प्रदर्शन हेतु राष्ट्रीय पुरस्कारसँ सम्मान ओ प्रतिष्ठित संस्थानमे नोकरीक सम्भावना आदि किछु सम्मोहक व्यवस्था नीक खेलाड़ीक हेतु उपलब्ध अछि। 1961 ई० सँ 1993 ई० धरि करीब तीस गोट क्रिकेट-खेलाड़ी 'अर्जुन' पुरस्कारसँ सम्मानित भऽ चुकल छथि। भारतीय क्रिकेट दल 1983 ई० क 'विश्व कप' क्रिकेट प्रतियोगितामे विजेता (चैम्पियन) भऽ चुकल अछि। अतः भारतमे क्रिकेटक इतिहास प्रशंसनीय रहलैक अछि जकर मुख्य श्रेय युवा पीढ़ीकेँ छैक। आइ काल्हि युवा वर्गक रुझान एहि खेलक प्रति बेसी भऽ रहल छनि एतेक धरि कि धनोपार्जनक मुख्य श्रोत क्रिकेटकेँ सेहो बना रहल छथि।

–चन्द्रधर झा

पाठ-सन्दर्भ

पहिने खेलक अभिप्राय मात्र मनोरंजने टासँ होइत छल। आब एकर रूप वृहद् भऽ गेल अछि। ताहूमे क्रिकेट तऽ विश्वस्तरीय खेल भऽ गेल अछि। ओना सर्वप्रथम एकर शुरुआत इंग्लैण्डसँ भेल अछि। आइकाल्हि हरदम कोनो ने कोनो देशमे एकर

प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल खेलल जाइत रहैत अछि। क्रिकेट खेलसँ खिलाड़ी लोकनि धन तऽ उपार्जन करिते छथि प्रतिष्ठा सेहो अर्जन करैत छथि। भारतोमे ई खेल कतेक प्रसिद्धि पओलक तकर अनुमान अहीसँ लगाओल जा सकैछ जे गली-कूचीमे बच्चा सभकेँ क्रिकेट खेलाइत देखबैक।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) प्रारम्भिक कालमे क्रिकेटक की स्वरूप छलैक आ कोना खेलल जाइत छल ?
   (ii) एहि खेलक नियम कोन इसवीमे बनल आ की की नियम बनाओल गेल एहि समितिक अध्यक्षक नाम लिखू।
   (iii) सर्वप्रथम क्रिकेट क्लबक स्थापना कोन इसवीमे भेल आ कतय भेल ?
   (iv) राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित भेनिहार प्रमुख प्रतिस्पर्द्धाक संगहि भारतक प्रमुख खिलाड़ीक नाम लिखू।
   (v) क्रिकेटमे अम्पायरक भूमिका की होइत अछि, लिखू।
   (vi) एक दिवसीय मैच, टेस्टमैच आ 20-20 ओवरक मैचक संबंधमे संक्षिप्त वर्णन करू।
   (vii) भारतीय क्रिकेट दल कोन इसबीमे विश्वकप विजेता भेल ?
2. आशय लिखू :
   दू पारीवला मैच जे आरम्भमे तीन दिना होइत छल से पाँच दिना भऽ गेल अछि, जकरा टेस्टमैच कहल जाइछ जे अखनहुँ प्रचलित अछि।
3. सही उत्तर मे (√) लगाऊ आ गलत मे (×)।
   (i) रातुक खेलमे। रंगहीन कमीज वा गंजी पहिरवाक नियम अछि।
   (ii) प्रारम्भिक कालमे अनिश्चित निश्चित नियम बनाओल गेल छल।
   (iii) ओहि क्षेत्रक खेतिहर सभ प्रत्येक रवि दिन धनोपार्जनार्थ ई खेल खेलाइत छलाह।
4. (i) विश्वक ..... क्रिकेटक आदर्श मैदानमे सँ .....मैदान ..... मे अछि।
   (ii) क्रिकेटक संचालन एवं व्यवस्थाक भार ..... अछि।

(iii) 1961 सँ 1993 धरि करीब ..... खिलाड़ी .....पुरस्कारसँ सम्मानित भऽ चुकल अछि।

5. भाषा बोध–

(i) क्लब, दल, समूह, लोकनि कोन तरहक संज्ञा अछि, लिखू।

6 सोच-विचार

(i) क्रिकेट सन आन कोनो दोसर अन्तर्राष्ट्रीय खेलक सम्बन्धमे वर्गमे चर्चा करू। शिक्षकसँ अपेक्षा जे छात्रकेँ एहि सम्बन्धमे सहयोग करथि।

7. शब्दार्थ

डयूक - जमींदार

सम्भ्रान्त - सम्मानित

आकृष्ट - आकर्षित होयब

सम्मोहक - मुग्ध कऽ देनिहार

■

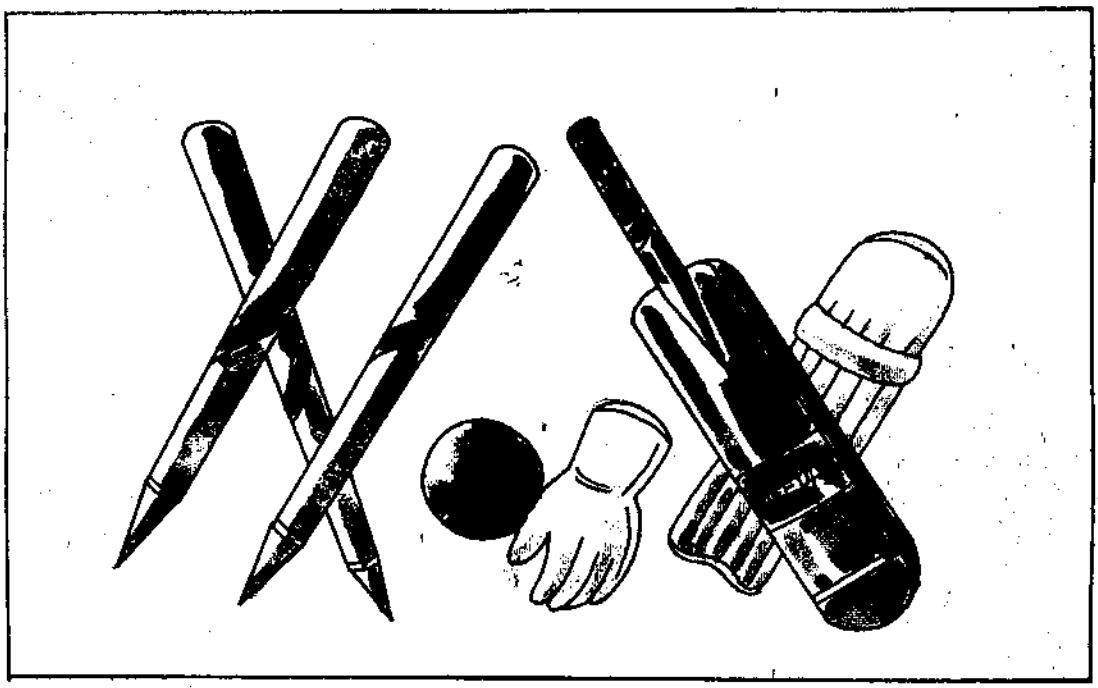

राष्ट्रीय एकता

हमारा लोकनिक राष्ट्र अनेक प्रकारक लोक एवं अनेक प्रकारक भाषासँ बनल अछि। विभिन्न प्रदेशमे विभिन्न भाषा-भाषी लोक सभ अछि। अपन बिहारे प्रदेशकेँ देखल जाय, जतय कतेको प्रकारक भाषा ओ बोली बजनिहार समाजक निवास अछि। सभक अपन-अपन इतिहास छैक, अपन-अपन आचार-विचार छैक, अपन-अपन चालि-चलन छैक। छोटानागपुरक मुंडा लोकनि भोजपुरक ग्रामवासी सनक अपन

जीवन-क्रम नहि रखैत छथि। तहिना मिथिलाक ग्राम्य जीवनक तुलना मगधक ग्राम्य जीवनसँ कयला पर बड़ अन्तर बूझि पड़ैत अछि। यदि बिहारवासीक तुलना तमिलनाडुक लोकसँ करी तँ विभिन्नता आओर बेसी भेटैत अछि। मुदा एहि प्रकारक विभिन्नताक अछैतो सभ ठामक लोकमे भावनाक समता देखल जाइत अछि। हमरालोकनि फराक-फराक नगर, गाम, जिला आ प्रदेशमे रहैत छी। भिन्न-भिन्न पाठशालामे शिक्षा ग्रहण करैत छी। भिन्न-भिन्न व्यवसायमे लागल रहि अपन जीवन-यापन करैत छी। तथापि अपन देशक नाम भारते कहैत छी! अपनाकेँ भारतीय घोषित करैत छी। अपनाकेँ भारतीय कहबामे एकटा गौरवक बोध होइत अछि। अनेक अवसर एहन अबैत अछि जखन भारतीयताक भावना अनायासे तरंगित भऽ उठैत अछि। युद्ध स्थलमे अथवा खेलक मैदानमे अपन देशक विजयक समाचार सुनि सभक मोनमे एके रंगक तरंग ओ उत्साह होइत अछि। तहिना पराजयक समाचार जानि समाने रूपसँ सभक मोन छोट भऽ जाइत अछि। यैह थिक भावनाक समता। अपन देशक सम्बन्धमे एके रंग सब सोचय, अनुभव करय ओ आचरण करय, सैह थिक राष्ट्रीय एकता। एकताक ई भावना हमरा लोकनिक मोनमे बसल रहैत अछि आ समय अयला पर जागि उठैत अछि।

हमरा लोकनिक जीवन ओ समाजमे अथवा देशमे घटित होबय वला नीक आ अधलाह घटनाक मूल कारण थिक मोन। मोनमे जेहन विचार रहैत छैक, काजो तेहने होइत छैक। नीक विचारसँ नीक काज होइत छैक, अधलाह विचारसँ अधलाह काज। मोन सदिखन एकरंग नहि रहै छैक। ककरोसँ झगड़ा भऽ जाय तँ ओकरामे सभटा दोष बुझाइत छैक। झगड़ा कोनो कारणे भेल हो, कोनो तुच्छे बातक लेल भेल हो मुदा से भऽ गेला पर सभ बात अधलाहे अधलाह बूझि पड़ैत छैक।

अपन देशमे कतेको वर्गक लोक अछि, कतेको धर्मक लोक अछि, कतेको जातिक लोक अछि। कश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि देखि जाउ तँ कतेको प्रकारक संस्कृति भेटत। मुदा सभ भारतेक माटि पर बसल अछि, हजारो-हजार वर्षसँ भारतेक पानि एकरा

सीचैत रहल अछि। एही क्रममे पारस्परिक मतभेद सेहो होइते रहल अछि; से राजसत्ताक नाम पर, भौगोलिक सीमाक नाम पर, धर्मक नाम पर, जातिक नाम पर, भाषक नाम पर आ एहिना अन्यान्य वस्तुक नाम पर। इतिहास साक्षी अछि जे मतभेद बढ़ला पर अपनामे मारि-काटि सेहो मचल अछि। एहि सभसँ पृथक्ताक भावनाकेँ जड़िअयबाक अवसर भेटलैक अछि। अवश्ये कोनो भावावेश, कोनो उत्तेजना अथवा कोनो तात्कालिक स्वार्थक कारणे उत्पन्न वैमनस्यसँ राष्ट्रीय एकताक आधारशिला डोलि उठैत अछि। लगैत अछि जेना राष्ट्रक एकता खतरामे पड़ि गेल अछि। एहन-एहन परिस्थितिमे राष्ट्रक एकता टुटि जयबाक संभावना रहितहि छैक। तेँ प्रत्येक भारतीयकेँ सतत सावधान रहब आवश्यक आ चेष्टा ई रहय जे एकताकेँ विघटित करऽ वला परिस्थितिकेँ उत्पन्ने ने होबय देल जाय।

इतिहासक पृष्ठ उनटा कऽ देखू। राष्ट्रीय संकटक घड़ीमे देशक कोनो ने कोनो कोणसँ एहन युगपुरुषक उदय भेल जे भारतीयताक सूत्रकेँ सुदृढ़ कयलनि। विभिन्न कालखंडमे, विभिन्न क्षेत्रमे एहन अनेको महापुरुष सभ भऽ गेलाह अछि जनिक विचार ओ कार्यक अनुकरण-अनुसरणसँ राष्ट्रीय एकताक भावना विकसित होयत। शंकराचार्य, सन्त कबीर, महाप्रभु चैतन्य, शंकरदेव, गुरु नानक इत्यादि एहने महापुरुष भेलाह जनिक विचार-आचारक अनुकरण भारतीय एकताक भावनाकेँ पुष्ट करत। देशक एकताकेँ मजबूत बनाओत।

आइ देशक समक्ष एकताक एहन पृष्ठभूमिक आवश्यकता अछि जाहिमे क्षुद्र स्वार्थक स्थान नहि हो। अपन छोट-छोट स्वार्थकेँ मोनमे ओतबा स्थान नहि दी जे देश ओ समाजक भविष्यक सम्बन्धमे सोचबाक हेतु पलखतिए नहि हो। यदि हमरा लोकनि अपने-अपन क्षेत्र, जाति, धर्म इत्यादिक दोहाइ दऽ कऽ दोसराक उपेक्षा करबैक, अपमान करबैक; तँ झगड़ा बढ़त, वैमनस्य बढ़त, कटुता बढ़त, अशान्ति बढ़त। तखन अधिक समय लड़बेमे बीतत। कखनो लड़ाइक तैयारीमे, कखनो आत्मरक्षाक आयोजनमे। एहिसँ होयत की ? समयक अपव्यय, श्रमक क्षय, सम्पत्तिक विनाश। कृषि, कारखाना एवं

अन्यान्य उत्पादनक काजमे ढिलै भऽ जायत । उत्पादन नहि होयत, होयत तँ समय पर नहि होयत, नीक कोटिक उत्पादन नहि होयत । एकर परिणाम होयत जे हमरा लोकनिक देश गरीब अछिहे, आओरो गरीब भऽ जायत । गरीबीक कारणेँ देशक विकास नहि होयत । देशवासीक जीवन कष्टमय भऽ जायत । तखन आन-आन सम्पन्न देशक दया पर निर्भर होबय पड़त । देशक स्वाभिमान ओ मर्यादामे बट्टा लागत । की एहन परिस्थिति कोनो भारतवासीकेँ सहन योग्य होयत ?

अपन देशक प्रत्येक नागरिकक हेतु गम्भीरतासँ विचारबाक बात थिक जे राष्ट्रीय स्वाभिमान ओ मर्यादाकेँ कोना सुरक्षित राखी । स्वाभिमान ओ मर्यादाक सुरक्षा तखने संभव, यदि हमारा लोकनिमे एकताक भावना सबल होइत जाय । हमरामे एकता रहत तँ कोनो आन देशकेँ हमरा देश दिस आँखि उठयबाक साहस नहि होयतैक ।

अपनामे एकता रहत तँ उत्पादन अधिक होयत । अपव्यय नहि होयत–ने समयक, ने श्रमक आ ने सम्पत्तिक । अपनामे मेल-जोल रहने दोसराक गुण नीक जकाँ देखऽमे अबैत छैक । गुण-दर्शनसँ धर्म, संस्कृति, भाषा, साहित्य इत्यादिक नीक-नीक तत्त्वक पारस्परिक आदान-प्रदान बढ़त । देशक सभ वर्गक लोक एक-दोसरासँ लाभ उठा सकत । सभक लाभमे देशक लाभ छैक । देशेक लाभ सर्वोपरि अछि । देशक लाभ पारस्परिक एकतेसँ पूर्ण संभव अछि ।

अत: ई अत्यावश्यक अछि जे हमरा लोकनिमे एक राष्ट्रक वासी होयबाक भावना बनल रहय । राष्ट्रीय एकताक भावना निरन्तर जाग्रत रहय ।

–हेतुकर झा

पाठ-सन्दर्भ :

प्रस्तुत पाठमे राष्ट्रीय एकताक महत्व देखाओल गेल अछि । भारतमे कोना विविधताक बीच एकता अछि, कटुता, द्वेष, वैमनस्यता कोना बढ़ैत अछि, वैमनस्यता बढ़ला पर कोन-कोन हानि होइत अछि, एकता रहने देशक उन्नति कोना संभव अछि आदि देखाओल गेल अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) भारतमे विविधता अछि, कोना ?
   (ii) राष्ट्रीय एकता की थिक ?
   (iii) देशमे कटुता आ अशान्ति कोना बढ़ैत अछि ?
   (iv) देशक लाभ सर्वोपरि होइछ, से कोना संभव थिक ?
   (v) प्रत्येक भारतीयकेँ कोन बातक लेल सतत साबधान रहबाक चाही ?
   (vi) प्रस्तुत पाठमे कोन-कोन महापुरुषक नामक उल्लेख कयल गेल अछि ?
   (vii) प्रस्तुत पाठमे उल्लिखित महापुरुषक अतिरिक्त कोनो आन दसटा महापुरुषक नाम बताउ ।

2. आशय स्पष्ट करु :–

   अपन देशक प्रत्येक नागरिकक हेतु गम्भीरतासँ विचारबाक बात थिक जे राष्ट्रीय स्वाभिमान ओ मर्यादाकेँ कोना सुरक्षित राखी । स्वाभिमान ओ मर्यादाक सुरक्षा तखने संभव, यदि हमरालोकनिमे एकताक भावना सबल होइत जाय ।

3. सही उत्तरमे सहीक निशान (√) लगाउ–
   (i) विभिन्न प्रदेशमे विभिन्न भाषा-भाषी लोक सभ अछि ।
   (ii) अपन देशक विजयक समाचार सुनि सभक मोनमे एक्के रंगक तरंग ओ उत्साह होइत अछि ।
   (iii) आइ देशक समक्ष एकताक एहन पृष्ठभूमिक आवश्यकता अछि जाहिमे क्षुद्र स्वार्थक स्थान नहि हो ।
   (iv) अपनामे एकता रहत तँ उत्पादन अधिक नहि होयत ।

4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू–
   (i) विभिन्नताक अछैतो सभठामक लोकमे ..... समता देखल जाइछ ।
   (ii) अपनाकेँ भारतीय कहबामे एकटा ..... बोध होइत अछि ।
   (iii) नीक वा अधलाह घटनाक मूल कारण थिक ..... ।

(iv) अपना देशमे कतेको ..... लोक अछि।

(v) कश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि देखि जाउ तँ कतेको प्रकारक ..... भेटत।

5. भाषा बोध :

(i) प्रस्तुत पाठसँ पाँचटा संज्ञा शब्दक चयन करू।

(ii) पाठमे प्रयुक्त अव्यय शब्दकेँ चुनि कऽ लिखू।

6. सोच-विचार :

(i) 'भारतमे विविधताक बीच एकता अछि' एहि विषय पर शिक्षकक सहायतासँ कक्षामे चर्चा करू।

7. शब्दार्थ

फराक-फराक–अलग-अलग

तरंग–लहरि

अनायास–बिना प्रयासकेँ

स्थल–जगह, स्थान, भूमि

सतत–हरदम, लगातार

■

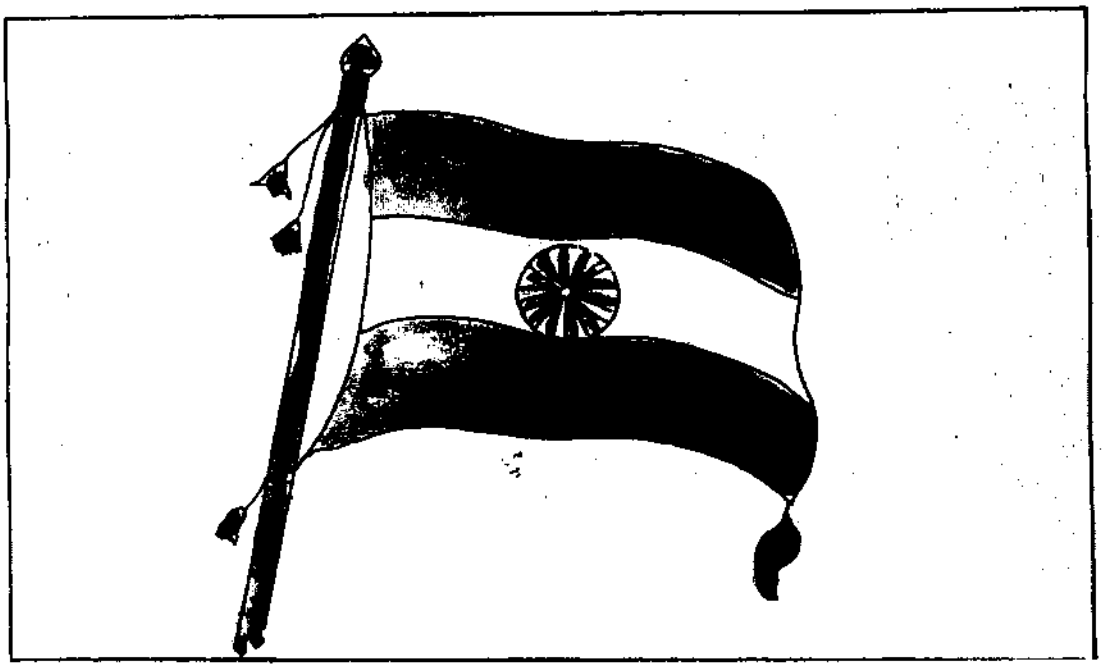

मङली मायक बकरी

मङली माय आशा लगओने छलै जे पहिले बेर जकाँ ओकरा बकरी केँ दू टा बच्चा होयबे करतैक। ओ बड़ मनोयोगसँ पोआड़, गुल्लरिक पात, अंडीक पात आनि-आनि बकरीकेँ खुअबैत रहैत छलैक। बकरीक देह बड़ भारी भऽ गेल छलैक। चलि नहि होइत छलैक। तेँ आब मङलीमाय बकरीकेँ बाध दिस चरबाक लेल नहि जाय दैत छलैक।

मुदा बकरीक जाति, खुट्टा पर बान्हल नहि रहि सकैत अछि। जाबत दू चारि धाप चरत नहि, मोने ने भरैत छैक। तेँ मङलीमाय घरक पछुआड़क बँसबाड़िवला परतीमे खुट्टी गाड़ि अबैत छलैक।

बसबाड़ि छलैक छेहड़ । बसबाड़िक परतीक बाद छलैक खेत सभ । खेत सभ आबाद छलैक । चारूकात हरियरी पसरल । कोनो माल-जालकेँ ओहि हरियरी दिस जा कऽ दू-चारि कउर खा लेबऽ लेल आतुरता भऽ जाइत छैक । तेँ, मङलीमाय खुटेसल बकरीकेँ अवस्से जा कऽ देखि अबैत छलि जे खुट्टी उपाड़ि कऽ, की नमरि कऽ ओ ककरो जजाति ने खा लैक ।

ओहि दिन मङलीमाय बकरीकेँ बान्हि दऽ अयलैक । कय बेर देखियो अयलैक । मुदा बेरुक पहर कोनो काजमे बाझि गेला सँ विलम्ब भऽ गेलैक । साँझमे हहालि-पुहाइलि बसबाड़िक परती दिस दौड़लि ।

परती पर गेलि तँ जी धक् दऽ रहि गेलैक । खुट्टी गड़ले छलैक । मुदा बकरीक कतहु थाह नहि छलैक । ओ चारूकात नजरि खिरौलक । कतहु करिक्की बकरी देखऽमे नहि अयलैक ।

मङलीमायक मोनमे अंदक पैसि गेलैक । आब ओकर बकरी नहि भेटतैक । ओ आगाँ बढ़ि परतीक नीचाँवला खेतमे देखऽ लगलैक । खेतमे किछु जजाति टटका चरल बूझि पड़लैक । ओ आरिए धयने आगाँ बढ़ैत गेलि । गहूम आ राहड़िक घनगर खेतमे पैसि तकलक । ओ आगू बढ़ैत गेलि । परन्तु बकरी कतहु देखऽमे नहि अयलैक ।

तावत झलफल भऽ गेल छलैक । सांझक रंग, अन्हार चारूकात पसरि गेल छलैक । कतहु कारी वस्तु देखय तँ होइक जे हमरे बकरी थिक । ओ अर्र....., ली: करैत ओहि दिस बढ़ि जाइत छलि ।

ओ एकपेरिया धयने नहरिक काते-काते आगाँबढ़ितो जाय, एनिहार गानिहारकेँ पुछितो जाय आ अनवरत अर्र.....ली: अर्र.....ली: करैत जाय बाटमे बजारसँ घुमैत एकटा मौगी भेटलैक । ओकरोसँ मङलीमाय वैह कथा पुछलकै । ओ मौगी कहलकैक हँ गय बेचारी । बजार जाइ कालमे देखने छलियैक एकटा मरदबा कारी बकरीकेँ एहि दिस रबाड़ने जाइत छलैक । बकरी गाभिन छलै से दौड़ि नहि होइ छलै ।

मङली माय हाकरोस कऽ उठलि। ओ छाती पीटैत ओहि दिस दौड़लि। दौड़ैत गेलि, दौड़ैत गेलि। बकरी नहिएँ भेटलैक। ओ थकमका कऽ ठाढ़ भऽ गेलि।

मङली माय ओहिठामसँ आपस भऽ गेलि। अबैत काल ओ बाटे-बाट देवता-पितरकेँ गोहरबैत जाइत छलि। घर लग पहुँचलि तँ बाटे पर एकटा छौंड़ा जोरसँ चिकरि कऽ कहलकै–'गै दादी! बकरी आबि गेलौ अपने मोने।''

मङली माय दौड़लि खुट्टा पर। डिबियाक इजोतमे देखलक, बकरी नितुआन भेल बैसल; जोर-जोरसँ हकमैत आ थोड़ेक-थोड़ेक काल पर कछमछाइत। मङलीमाय ओकरा सौंसे देह हँसोथैत कहलकैक–''कतय चल गेल छलैहेँ? देख तँ, तोरा लय अन्हारमे बाधे-बोने कते छिछिएलौहेँ?''

बकरी सिनेहक भाषा बूझि मूड़ी उठा कऽ मङलीमाय दिस तकलकैक। डिबियाक इजोतमे बकरीक दुनू आँखि चमकि उठलैक। ओहि आँखिमे जेना अव्यक्त वेदना उमड़ि गेल छलैक। पशुओकेँ हर्ष-विषाद आ सुख-दुःख होइत छैक। मङलीमाय गुल्लरिक पात आनि कऽ देलकैक, मुदा बकरी सूँघि छोड़ि देलकैक। मङलीमाय बड़ी राति घूर कऽ कऽ सेद - माँड़ करैत रहलैक, मुदा बकरी ओकरा देखि कऽ ने हुँकरलैक, ने ओती रातिधरि एकोबेर पाछाजे कयलकैक।

दैवा रे दैवा। आइ हमर बकरी नै बचतै। हमरा बकरीकेँ रेका कऽ मारि देलक।' – मङली मायक मोन आशंकासँ भरि गेलैक। राति बहुत बीति गेल छलैक। मङलीमाय बकरीकेँ सेदैत-सेदैत थाकि निन परि गेल।

अचानक बकरीक भोम्हिअयनाइ सुनि कऽ निन टूटि गेलैक। ओ चेहा कऽ उठलि, भरिपाँज बकरीकेँ समेटैत चिचिया उठलि-'दौड़ गय मङली। डाका पड़लौ गय।'

मङली हाजि-हाजि कऽ धूर पजारलक, मङलीमाय बकरी कोरमे रखने छलि, मुदा बकरीक टाङ सभ छिड़िआयल छलैक। घौना लटकि गेल छलैक। मङलीमाय हिचुकऽ लागलि। पछिलो साल एहिना बकरीसँ गाड़ा-जोड़ी कऽ कानलि रहय, ठीक ओहिना जेना कोनो माय अपन बेटीक संग कनैत अछि।

ओहि बेर बकरीकेँ दूटा पठरू भेल छलैक, एकटा छागर, एकटा पाठी। छागर उज्जर आ पाठी कारी वर्ण। खूब नमहर-नमहर टाङ, बड़का-बड़का लटकैत कान। दुनू पठरू लगैत जेना सद्य: फुलायल खेत ओ नीलकमल होइक। तीनिए दिनमे पठरू भरि आङन कूद-फान करऽ लागल छलैक।

मङलीमाय तुक पर दुनूकेँ दूध पिया कऽ छिट्टातरमे झाँपि दैत छलैक। तेसर दिन साँझ कऽ महिन्दर पहुँचलैक। ओकरा नाति भेल छलैक, मुदा दोसरे दिन टिटनस भऽ गेलैक। लोक अस्पताल लऽ गेलैक। आब ओहि बच्चाकेर जीवन रक्षाक समस्या भऽ गेलैक। मङलीमाय चुपचाप एक गिलास दूध दूहि कऽ दऽ देलकैक। अगिला दिन भोरमे आ फेरो दुपहरमे महिन्दर पहुँचलैक। मङलीमाय कहलकैक-'बाबू! एनामे तँ बकरीक दुनू बच्चा मरिए जायत।'

टोल-पड़ोसक लोकसभ मङलीएमायकेँ लुलुआबऽ लगलैक-"गय। मनुक्खक बच्चाक आगाँमे तोँ बकरीक बच्चाक मोह करऽ लगलेँ अछि? मनुक्खक जनमौटी बच्चा बाँचि जेतै तऽ एकटा नाम रहि जेतौ। बकरीक बच्चा कतौ मरलैए? आठे दिनमे खढ़ धऽ लेतौ, तखन ओकरा मायक दूधक कोन बेगरता रहतै?"

तकरा बाद आठ-दस दिन धरि एहिना दूध दूहि कऽ लऽ जाइत रहलैक। परतीयोमे चरबा काल महिन्दरक धिया-पूता बकरी केँ घंटे-घंटे दूहि लैक।

फल भेलैक जे बकरीक बच्चाकेँ मोन भरि दूध नहि भेटैक। दुनू पठरू भूखसँ मेमिआइत रहैक भरि दिन, भरि राति। दुनूक पाँजर सटि गेलैक।

महिन्दरक नाति तँ बचि गेलैक, मुदा बकरीक पठरू दूधकट्टू भऽ गेलैक। नितुआन भऽ कऽ मरि गेलैक। जाहि दिन ओ पठरू मरल छलैक ताहि दिन मङलीमाय बकरीक घेंट सँ घेंट जोड़ि कऽ खूब कानलि रहय। बकरीयो मेम्हिया-मेम्हिया कऽ ओकरा संग देने रहलैक। मुदा आइ बकरी ओकर संग नहि दैत रहै। देह निष्प्राण भेल ओकरा कोरामे रहै।

भिनसर भऽ गेलैक। बकरीक पाछाँ नव जनमल दुनू पठरू औहिना पड़ल छलैक। ठीक ओहने, जेहन पहिल बेर भेल रहैक। पहिल बेर पठरू जन्मक बाद

मेमिआय लागल रहैक, उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल रहैक, मुदा एहि बेर मुइले जनमलैक। मङलीमाय दुनू पठरूकेँ उठा कऽ देखलक। उजरा पठरूक देह पर दोदरा सभ देखऽ मे अयलैक जेना सटकासँ मारला पर भऽ जाइत छैक। मङली माय दुनू पठरूकेँ दुनू हाथमे पथरायल आँखिएँ तकैत मूरुत जकाँ बैसलि रहि जैतय मुदा ओकर ध्यान टूटि गेलैक।

बाहरमे क्यो जोर-जोरसँ चिकरि रहल छलैक–"ई बकरी पोसने अछि तँ जजाति चरा लेत ? काल्हि हमर एक कट्ठा गहूम चरि कऽ नाश कऽ देलक अछि। जाबत पचीस-पचास जरीमाना नहि हेतै ताबत एकर सभक चालि नहि छुटतै, से आइ हम सब दशा कऽ देबै।"

मङलीमायक कानमे गरजब कड़कल तेल जकाँ पड़ऽ लागल छलैक। फेर सुनलक – "गय, तोँ बहराइ किए ने छेँ ?

मङलीमाय बहरायलि। ओकर दुनू हाथमे दुनू पठरू लुजबुज भेल लटकल छलैक। ओ दुनू हाथक मुइल पठरू महिन्दरक आगाँमे पसारैत कहलकैक-बाबू ! जे जरीमाना कहब से हम भरि देब। आब तँ बकरियो ने अछि जे दूध दऽ कऽ सधा देब। मुदा जे दंड करब से कोनहुना सधा देब।"

महिन्दर अकबका गेल। मङली मायक हाथमे पठरूक देह आ ओकर मूड़ी लटकल झुलैत रहलैक।

रामदेव झा

पाठ सन्दर्भ :

– एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार पशुक प्रति प्रेम आ सामाजिक सद्भावक संदेश दैत छथि। जतय मङलीमाय अपन बकरी आ ओकर पठरूसँ अत्यधिक प्रेम करैत अछि तँ दोसर दिस ओकरे समाजक एकटा बच्चाक जान बचयबाक हेतु ओकरा बकरीक

दूध दैत अछि। दूधक अभावमे ओकर पठरू मरि जाइत छैक; परन्तु ओ सद्‌भावनावश बच्चाक हेतु दूध देब अस्वीकार नहि कयलक।

- दोसर दिस महिन्दर, जकर नातिक जीवन बकरीक दूधसँ बचलैक अपना पर भेल उपकार कें बिसरि गेल। ओकर निर्दयतासँ बकरी मरि गेलैक। ओकर ई काज पशुक प्रति निर्दयता आ सामाजिक सद्‌भावनाक विपरीत भेल।
- प्रत्येक मनुष्यकें पशुक प्रति प्रेम आ समाजक प्रति सद्‌भावना रखबाक चाही।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) मङली माय बकरीक कोना ध्यान रखैत छल ?
   (ii) बकड़ी हेरयलाक बाद मङली माय बकरी कें कतय- कतयतकलक ?
   (iii) की पशुओंकें हर्ष-विषाद होइत छैक ? कथाक सन्दर्भमे स्पष्ट करू ?
   (iv) मङली माय महिन्दरक नातिक जीवन बचयबाक हेतु की कयलक ?
   (v) मङली मायक उपकारक बदलामे महिन्दर की कयलक ?
   (vi) एहि कथासँ अहाँकें की शिक्षा भेटैत अछि ?
2. निम्नलिखित पंक्तिक आशय स्पष्ट करू
   "बाबू ! जे जरीमाना कहब से हम भरि देब। आब तँ बकरियो ने अछि जे दूध दऽ कऽ सधा देब। मुदा जे दंड करब से कोनहुना सधा देब।"
3. खाली स्थानकें भरू।
   (i) मङली मायक मनमे ..... पैसि गेलैक।
   (ii) कतहु कारी वस्तु देखय तँ होइक जे हमरे ..... थिक।
   (iii) साँझक रंग, ... चारूकात पसरि गेल छलैक।
   (iv) पशुओंकें ..... आ ..... होइत छैक।
   (v) ठीक ओहिना जेना कोनो माय अपन बेटीक संग ..... अछि।
4. सही कथन पर (√) एवं गलत कथन पर (×) क निशान लगाउ।
   (i) बकरीक देह बड़ हल्लुक भऽ गेल रहैक ☐
   (ii) कोनो माल-जालकें ओहि हरियरी दिस जा कऽ दू चारि कौर खा लेबऽ लेल आतुरता भऽ जाइत छैक। ☐
   (iii) बकरी सिनेहक भाषा बूझि मूड़ी खसा लेलक। ☐

(iv) महिन्दरक नाति केर जीवन-रक्षाक समस्या भऽ गेलैक। ☐

(v) मङलीमायक हाथमे पठरूक देह आ ओकर मूड़ी लटकल झुलैत रहलैक। ☐

5. भाषा बोध

शब्द-विचार

व्यवहारक दृष्टिसँ मैथिली-भाषाक शब्दकेँ चारि भागमे बाँटल गेल अछि —तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज।

तत्सम– संस्कृतक मूल शब्द जे मैथिलीमे प्रयोग होइत अछि। जेना-जल, शरीर, विद्यालय आदि

तद्भव– संस्कृत शब्द, जे किछु विकृतिक संग प्रयोग कयल जाइत अछि। जेना-आगि, हाथ, आँखि आदि।

देशज– मैथिली-भाषाक अपन शब्द, जे कोनो आन भाषासँ नहि आयल हो। जेना घोकब, करीन, बेसाहब, बेगरता, चड़फड़, निस्सन आदि।

विदेशज–विदेशी भाषाक शब्द सभ जे मैथिलीमे प्रयोग कयल जाइत छैक। जेना-आलमीरा, फीता, लालटेन, स्कूल आदि।

6. सोच-विचार

(i) अहाँ जे किछु बजैत छी, ताहिमे आयल शब्द सभक वर्गीकरण ऊपर देल गेल परिभाषाक अनुसार करू।

(ii) एहि कथामे आयल देशज शब्दक सूची अपन संगी एवं शिक्षकक सहयोगसँ बनाउ।

(iii) अहाँ अपन टोल-पड़ोस आ विद्यालयमे सभ-संगीकेँ प्रेरित करू जे केओ कोनो पशु पर अत्याचार नहि करय।

(iv) विद्यार्थीक मध्य प्रेम बनल रहय ताहि लेल कोन-कोन कार्य करबाक चाही– एकरा विचारि ओकर पालन करू।

■

अगहनक भोर

उठहिन भेलै बिहान
कलबल उठिहेँ जागौ ने बुच्ची हीलौ ने दोमै मचान
तोरे बहिनपाक भिट्ठा खेतक जेबै कटै लेल धान
'धुम-धुम' मुस्सर 'डिकिर-ड़िक' ढेकी घर घर मे दै छै तान
सुनहिन पिसनी लगनी गँबै छै दै छैक मीयाँ अजान
देखहिन भुड़ुकबा एलै कतेक दुर भेलैक फरिछ असमान
डुबलै बिलेलै पुबक तरेगन झलकै उखाक मुसकान

'जय जय मिथिला' चटिया पढ़ै छै आव-आव करै सयान
तापैत घुड़ बुढ़ गाबै परती सोहाओन भेलै खरिहान।

–काञ्चीनाथ झा 'किरण'

पाठ सन्दर्भ :

प्रस्तुत कवितामे कवि अगहन मासक भिनसरबाक वर्णन करैत कहैत छथि जे भोर भेला पर घर-घरमे ढेकी आ मुस्सरक घुम्म-घुम ध्वनि सुनबामे अबैत अछि। लगनी आ मीयाँक अजान सेहो भोरमे गुंजायमान होइत अछि। भुड़ुकबा तरेगन देखि लोक फरीछ होयबाक अनुमान लगबैत अछि। भोरहरबामे चटिया अपन पाठ पढ़ैत छथि। बूढ़-घूड़ (आगि) तपैत छथि आ पराती गबैत छथि। खरिहान धानसँ भरल रहलासँ सोहनगर लगैत अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) **किनकर खेतमे धान कटै लेल अयबाक छनि ?**
   (ii) **अगहन मासक भोरहरबामे कोन-कोन तरहक आवाज सुनि भोरक ज्ञान होइछ।**
   (iii) **कोन तरेगन देखलासँ भिनसरक अनुमान होइछ ?**
   (iv) **चटिया, सयान आ बूढ़ अगहनक भोरमे की करैत छथि ?**
   (v) **अगहनक भोरक वर्णन करू।**
   (vi) **पठित काव्यक आधार पर अगहनक भोरक सारांश लिखू।**
2. **आशय लिखू :**
   (i) **कलबल उठिहेँ जागौ ने बुच्ची हीलौ ने दोमै मचान तोरे बहिनपाकेँ भिट्टा खेतक जेबै कटै लेल धान।**
   (ii) **'जय जय मिथिला' चटिया पढ़ै छै आव-आव करै सयान / तापैत घुड़ बुढ़ गाबै पराती सोहाओन भेलै खरिहान।**

3. सही उत्तरमे (√) लगाउ

(i) अगहन मासमे खरिहान धानसँ परिपूर्ण रहैछ ।

(ii) अगहनक भोरमे बूढ़ घूड़ नहि तपैत छथि ।

(iii) अगहनक भोरमे बूढ़ पराती गबैत छथि ।

(iv) भोरमे अजान नहि सुनल जाइत अछि ।

4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू

(i) उठहिन ..... बिहान ।

(ii) तोरे बहिनपा ..... खेतक जेबै कटै लेल धान ।

5. भाषा-बोध

शब्दार्थ

विहान–भिनसर

कलबल–शान्तिपूर्वक

बहिनपा–सखीक बीच सम्बोधनक स्वर

भिट्ठा खेत–तीन फसिला खेत ।

ढेकी–धान कुटबाक लेल पैर सँ चलाओल जायबला उपकरण

चटिया–छात्र

घूड़–अगियासी

पराती–प्रातः कालमे गयबाक गीत

खरिहान–फसिल तैयार करबाक स्थान

6. सोच-विचार

(i) अगहन मासक भोरमे गाबयबला परातीकेँ शिक्षक गाबि कऽ छात्रकेँ सुनाबथि ।

(ii) अगहन मास पर कोनो आन कविता छात्र वर्गमे सस्वर पाठ करथि ।

(iii) अगहन मासक महत्ता पर वर्गमे छात्र विचार-विमर्श करथि ।

■

मिथिला–लोकचित्र

दुपहरियाक समय । सौंसे टोल शान्त छल । सुनीता अपन संगी सभसँ भेँट कऽ अङना आयल तऽ देखलक जे ओकर बाबी ओसारा पर बैसल एकटा पैघ कागज पर किछु लीखि रहल छथि । ओ चुपचाप बाबीक पाछूमे जा ठाढ़ भऽ गेल आ देखय लागल । आहिरे बा ! ई की ? बाबी तऽ डिब्बी, मुन्ना सभमे बहुत तरहक रंग रखने छथि आ चित्र बनाय रहल छथि । सभ चित्र, विचित्र आ टेढ़टूढ़ । भरिसक बाबीकेँ चित्र नहि बनबय अबैत छनि । हमरा स्कूलमे जे ड्राइंग करोओल जाइत अछि, से कत्ते सुन्दर होइत छैक । लगैये जेना बाबी एखन चित्र बनायब सीखिये रहल छथि । यैह सभ सोचैत सुनीताकेँ एकाएक हँसी लागि गेलै ।

ओ बाबीकेँ टोकलक–'ई की करैत छी बाबी ? चित्र कत्तौ एहन होइ ?'

सुनीताक हँसी सुनि बाबीक हाथ रूकि गेलनि । पाछू मूड़ी घुमा कहलथिन–'सुनीता ! एकरा मिथिला-लोकचित्र कहल जाइत छैक । ई एहने होइत छैक ।'

लोकचित्र शब्द सुनि सुनीताक उत्सुकता बढ़ि गेल ओ पाछूसँ आगू आबि बैसि गेलि ।

बाबी ओकर मनोभाव बूझि गेलथिन ओ चित्र बनायब छोड़ि अपन दुलारू पोतीकेँ मिथिला-लोकचित्रक विषयमे कहऽ लगलीथन ।

बाबी-'सुनीता । मिथिलामे प्राचीनकालहिसँ मिथिला-लोकचित्र बनयबाक परम्परा रहलैक अछि । पहिने एखन जकाँ ईंटक घर थोड़बे होइत छलैक ! टाट आ भीतक घर होइत छलैक । ओकरा सजयबा लेल स्त्रीगण गाछ-पात, फूल-फड़ आदि प्राकृतिक वस्तुसँ रंग बनाय देबाल पर विभिन्न प्रकारक चित्र बनबैत छलीह । ओहिमे मनुक्रव, चिड़ै-चुनमुन्नी, जानवर, गाछ-पात, फूल-फल अथवा कोनो दृश्यक चित्र बनाओल जाइत छल ।' सुनीता - 'बाबी ! एहने टेढ़-टूढ़ आ कचबच !

बाबी किंचित मुस्कियाइत बजलीह-'धुर बताहि ! यैह ने एकर विशेषता छैक । अही कारणेँ तऽ मिथिला-लोकचित्र समस्त संसारमे प्रसिद्ध अछि ।

ई बात सुनि सुनीताक जिज्ञासा आरो बढ़ि गेलैक ।

बाबी पुन: अपन बात आगू बढ़ौलनि-'आब तऽ लोक कागज आ कपड़ा पर सेहो ई चित्र सभ बनबय लागल अछि । प्राकृतिक रंगक स्थान पर कृत्रिम आ बजारक रंगक उपयोग सेहो होअय लागल अछि । प्राकृतिक-दृश्यक अतिरिक्त रामायण, महाभारत, पौराणिक-कथा अथवा बिआह-दुरागमन आदि सामाजिक प्रसंगकेँ चित्रक माध्यमे प्रस्तुत कयल जाइत अछि । एतबे नहि, चित्रक मध्य जे खाली स्थान रहि जाइत छैक, ताहूमे विभिन्न प्रकारक आकृति बनौ देल जाइत छैक । हमर बनाओल चित्र सभकेँ ध्यानसँ देखही ! तोँ अपने बूझि जेबही ।'

सुनीता–'बाबी ! तखन तऽ बड़ महत्त्वपूर्ण वस्तु थिक मिथिला-लोकचित्र !'

बाबी–सुनीता ! मिथिला-लोकचित्रक महत्व तऽ आब अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर पर पसरि गेल छैक । जापानमे 'मिथिला-लोकचित्र' या मिथिला पेंटिंग; जे कहियै तकर संग्रहालय धरि बनाओल गेल छैक । आब तऽ घऽरमे, कोनो सार्वजनिक स्थान पर

मिथिला पेंटिंग टाँङब अथवा एहि लोकचित्रसँ डिजाइन कयल वस्त्र पहिरब प्रतिष्ठाक विषय बूझल जाइत अछि। अपना क्षेत्रक कतेको महिला-लोकनि एहि कलामे प्रसिद्धि प्राप्त कऽ अपन राज्य आ देशक सम्मान बढ़ौलनि।

'बाबी! आइ बड़ नीक बात सभ कहलहुँ। मिथिला-लोकचित्र बनायब हमरोसभकेँ सिखबाक चाही।' –सुनीता विस्मित भऽ बाजल।

'अवस्से कि ने! ई तऽ हमरालोकनिक खूनमे रचल-बसल अछि। भरि गर्मी-छुट्टी हमरा संग बैसि अभ्यास करबेँ तऽ निश्चित सीखि जयबेँ, बाबी उत्साहित करैत कहलथिन।

'ठीक छै, बाबी! हम कालिहयेसँ सीखब आ सीखि कऽ पटनामे अपन संगिओ केँ सिखायब।' ई कहि सुनीता मिथिला-लोकचित्र सिखबाक सामान जुटयबामे लागि गेल।

– इन्दिरा झा

पाठ सन्दर्भ :

- मिथिला लोकचित्रक सामान्य जानकारी देब।
- विद्यार्थी केँ अपन कला-संस्कृतिक प्रति गौरवक बोध करायब।
- मिथिला लोकचित्र सिखबाक हेतु प्रेरित करब।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) मिथिला लोकचित्र कोना बनाओल जाइत अछि ?

(ii) मिथिला लोकचित्र कतय बनाओल जाइत अछि ?

(iii) मिथिला लोकचित्र बनयबामे कोन वस्तुक प्रयोग होइत अछि ?

(iv) मिथिला लोकचित्रक प्रसिद्धिक विषयमे अहाँ जे जनैत छी से लिखू।

(v) मिथिला लोकचित्र कोन-कोन विषय पर आधारित अछि ?

2. निम्नांकित कथन पर सही (√) आ गलत (×) क निशान लगाउ।

(i) मिथिला लोकचित्र अत्यन्त सोझसाझ होइत अछि। □

(ii) मिथिला लोकचित्र एक आधुनिक परम्परा थिक। ☐

(iii) मिथिला लोकचित्रमे प्राकृतिक रंगक प्रयोग होइत छैक। ☐

(iv) मिथिला लोकचित्र समस्त संसारमे प्रसिद्ध अछि। ☐

(v) मिथिला लोकचित्रक संग्रहालय जापानमे स्थापित अछि। ☐

3. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(i) एकरा मिथिला ..... कहल जाइत छैक।

(ii) प्राचीन कालहिसँ ..... बनयबाक परम्परा रहलैक अछि।

(iii) प्राकृतिक रंगक स्थान पर ..... आ ..... रंगक उपयोग सेहो होअय लागल अछि।

(iv) मिथिला लोकचित्रक महत्त्व तऽ आब ..... स्तर पर पसरि गेल छैक।

(v) सुनिता मिथिला लोकचित्र ..... सामान जुटयबामे लागि गेल।

4. भाषा-बोध

कोनो शब्दक विपरीत अर्थबाला शब्दकेँ विपरीतार्थक शब्द कहल जाइछ। जेना–बालक-बालिका, आकाश-पाताल, अन्हार-इजोत आदि।

(i) निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू।

शान्त, पाछू, सुन्दर, उत्सुक, प्राकृतिक, प्रतिष्ठा, सम्मान, उत्साहित।

5. सोच-विचार

(i) अहाँ अपना परिवेशसँ फूल, पात, फड़क रंग अथवा कोनो अन्य रंगसँ मिथिला-लोकचित्र बना कऽ अपन वर्गमे प्रस्तुत करू।

(ii) अहाँक गाममे के सब मिथिला लोकचित्र बनबैत छथि, हुनकर पता कऽ हुनकासँ चित्र बनयबाक जानकारी प्राप्त करू।

(iii) मिथिला लोकचित्र आन चित्र सभसँ कोना अलग अछि तकर खोज करू लिखू।

(iv) मिथिला लोकचित्रकलाक ख्यातिप्राप्त कलाकार लोकनिक नाम लिखू।

■

अपना लयमे

भोरेसँ अशांत छलीह मुजौनाबाली । ककरो बोल-भरोससँ करेज थिर नहि भऽ पबनि । खने दिनकर-दीनानाथकेँ गोहराबथि तँ खने भगवती-गोसाउनिकेँ सुमिरथि । आब की हेतै गे दाइ ! दृष्टि बेर-बेर उतरबरिया घरमे चकभाउरकऽ अबनि, मुदा डेग संग नहि देनि । थकमकायल ठाढ़ि छलीह, कि देखलनि उतरबरिया घरमे लोकक आवाजाही घनगर भेल जाइ छै । प्राय: सभ गोटे जुँटि गेल छथिन ओहीठाम । करेजक धड़धड़ी बढ़ऽ लगलनि । जी जाँतिकऽ उठलीह आ डेग ओही घर दिस अगुआय लगलनि ।

उतरबरिया घर बेसी पैघ नहि छल। ओ तँ घर रहबे नहि करय। असोरेकेँ घेरि-घारि बेगर्ते केबाड़-चौकठि लगा देल गेल रहै। असलमे मुजौनाबालीक आँगन गुने लोकक संख्या बेसी। से होउ कोना ने। असगरुओक आँगन नहि ने छै। अखनो एहि एक आँगनमे तीनू बाबाक सखा-संतानक निमेरा भऽ रहल छै। तीनू बाबा लेल ई सबिकाहा घर-आँगन लछमिनिया-सगुन्निया। तैं अफरात जगह-जमीन रहितो तीनूमे सँ क्यो आँगनसँ बहराय लेल राजी नहि। कहाँदन बुढ़िया मैंयाँ कहि गेल रहथिन जे एहि डीहकेँ नहि छोड़िहह। से हुनकर मुँहसँ बहरायल गप बेटा सभ लेल ब्रह्मवाक्य बनि गेल। ताहि दिन आश्रमो एते टा नहि रहै। तीनू भाइ रहथि, तीनू देयादिनी आ तीनूकेँ एकहि रंग चारिटा कऽ बेटा, एकटा कऽ बेटी। से तीनू भाइ राजी-खुशी ओहि चौघरा पुश्तैनी मकानकेँ बाँटि लेलनि। आँगन एके रहल आ गोसाउनिघर सेहो सभक सझिया।

से तँ बहुत पहिनेक गप। जमाना बीति गेल। आब तँ तीनू भाईक बेटो-बेटी सभक नाति-पोताक बिआह-दान होबऽ लगलनि अछि। समय कोना बीतै छै, से लोक एहिना कऽ बुझि पबैए। तीनू भाइ आब छथियो नहि। सभसँ पहिने मझिली मैंयाँ बिदा भेलथिन। मझिली मैंयाँक बाद मझिला बाबा। यैह दू बर्ख पहिने माघे मासमे बड़का बाबा विदा भेल रहथि। आब आँगनमे बड़की मैंयाँ छलीह। छोटका बाबा आ छोटकी मैंयाँ छलीह। सभक सखा-संतान बेसी शहरे अगोरने रहथिन। गनि-गुथिकऽ तीनू पट्टीमे चारि टा देयादिनी गाम धेने रहथि।

मुदा काज-तिहारमे सौंसे परिवार उपस्थित भऽ जाय। आ से देखनाहरोकेँ अजगुत लगै जे ओतबे जगहमे कोना ओतेटा आश्रम आ लेआओन-बजाओनक कुटुम्बक अँटावेश भऽ जाइक। जा धरि काज-उद्यम रहय—आँगन लोकसँ गनगनाइत रहय। फेर सभ अपन-अपन ठाम। से, आश्रम पैघ रहलाक कारणे सभदिन कोनो-ने-कोनो काज-परोजन लागले रहय।

छोटका बाबाक मझिली पुतहु छथि मुजौनाबाली। ओना तँ समस्तीपुर रहै छथि, मुदा बौआक बिआहक उद्देश्ये गाम आयल छथि। बिआह तँ कहेन बढ़ियाँ शुभे-शुभे भऽ गेलनि। आब दुरागमन लेल मोनमे दुगदुगी पैसल छनि। अजुके दिन रहै। आ एम्हर बड़की मैंयाँक काल्हिएसँ हालत गंभीर। ओना हुनकर ई हाल पछिले सप्ताह सँ

छनि । तैं मुजौनाबाली बेसी अड्वालो नहि पसारलनि । बुधियारी आ सज्ञानि तँ छथिहे । तीनू ननदि आ अपन बेटी सभ । बस, एतबे गोटे आयल छलथिन । बड़की मैंयाँ पछिले मासस्ँ ओछान धऽ लेने छलीह । डाक्टरी जाँच, दबाइ चलि रहल छलनि । मुदा आब एहि अवस्थामे हार्टक बीमारी की चैन लेबऽ दै छै ! से रहि-रहिकऽ पीड़ासँ छटपटा उठथि । सपटी लगा लेथि । मुदा कष्टक लक्षण मुँहपर देखार भऽ जानि । बड़की मैंयाँक हाल देखि मुजौनाबाली हताश छलीह । हुनके लग चर्च कयने रहथि–'दुरागमन छोड़ि दै छिऐ अखन, कातिक-अगहनमे कऽ लेबै ?'

'से किएक ? दिन ठेकायल छै तऽ किए छोड़ब ।' बड़की मैंयाँ प्रतिवाद कयने रहथिन ।

'हिनकर मोन जे नीक नई छनि!'

'ताहि लेल कोन । अहाँ बौआ के दुरागमन लेल विदा करू । काज सम्पन्न हेबे करत ।'

मुजौनाबालीकेँ तैयो साहस नहि होनि !

बड़की मैंयाँ जेना गमलनि । नहुएसँ बाजल रहथि–'जाउ, अइहबक फड़ पका लिअ सभ देयादिनी मिलिकऽ । परगोत्री सँ बँटबा लेब ।'

अंतिम आखर सुनैत कोंढ़ दरकऽ लागल रहनि रानीटोलवालीक । बड़की मैंयाँक सबसँ छोट पुतोहु रानीटोलवाली । सभ दिन वैह लगमे रहलखिन । ओना अखन सभ बेटा-पुतोहु आयल छथिन ।

दुरागमनक बऽर-बरियाती गेल । आँगनमे अइहबक फड़ छनायल । कोबर लिखायल । बड़की मैंया ओछानेपर पड़ल-पड़ल सभ ठाम उपस्थित रहलीह । आब ई गीत कहै जइयौ–देखबैत-बुझबैत रहलीह । पुतोहु सभक ठोठ तँ नहि खुजलनि, पोती-पोतपुतोहु सभ कहुना कऽ विधि पुरौने गेलीह ।

आइ भोरसँ बड़की मैंयाक हाल आओर बेसी खराब भेल छनि । एको घोंट पानि कंठसँ नीचा नहि गेलनिएँ काल्हि सँ । सभकेँ आभास भऽ गेल छै– आब आर नहि । जे घड़ी छथि, सैह । तेँ मुजौनावालीक मोन थिर नहि छनि । बड़की मैंयाँ कखनो शिथिल भऽ आँखि मूनि लै छथि तँ कखनो जेना किछु मोन पड़नि–बाजऽ लागथि ।

बड़को बेटाकेँ बजा लेलखिन। आब अपन सभ बाल-बच्चाकेँ देखि लेलनि। बेरे-बेर छोट-माझिल बेटा सभ लग बाजथि– 'बड़ भोगलहुँ ! बड़ देखलहुँ ! कोनो इच्छा बाँकी नइ रहल। हम तृप्त भऽकऽ जा रहल छी। हमरा सोझा हमर चारू बेटामे कहियो मतभेद नइ भेल, हमरा लेल ई सभ सँऽ पैघ खुशी अछि। हम सब के मोन सऽ आशीष दै छिऐ।'

से बाजथि जखन तँ पूरा होशमे लागथि। कखनो कहियो ककरो कुवचन नहि कहने रहथि। बड़की मैंयाँ अपने आँगन टा नहि, सौंसे टोलक बड़की मैंयाँ रहथि। भरि टोलमे हुनका सन अरिपन-कोहबर क्यो नहि लिखय। ककरो आँगनमे बिआह-उपनयन होअओ, बड़की मैंयाँ विधि बुझबथिन, गीत गबथिन। सभक काजकेँ अपन कऽ बुझथिन। आश्चर्य लगै लोककेँ–एते पैघ राजपाटक मलिकाइनि होइतहु हुनक व्यवहारक सरलता देखिकऽ। सदिखनि किछु-ने-किछुमे बाझलि। खुटखुट करैत्। से घर- आश्रमक भानस-भात सँ तऽ सभ दिन पुतोहु निश्चिन्ते रखलखिन मुदा नजरि घर-बाहर, खेत-खरिहान सभतरि रहै छलनि। भंडारक चाबी एखनो सिरमा तर धयल छनि। काल्हिसँ एहि घरसँ नहि बहरयलीह अछि। भरि घर हिनक स्थितिसँ विचित्र भावें एक-एक क्षण बिता रहल अछि। मझिला बाबा-गच्छक पुतोहु आ अपन बेटा-पुतोहु सभ क्षणो भरि लेल चौकठि नहि तेजलखिन-ए। छोटकी मैंयाँ खन देयादनीकेँ देखि जाथि तँ खन पुतोहुकेँ किछु सम्हारि देथि। छोटकी मैंयाँकेँ दुआरिपर ठाढ़ि देखि बड़की मैंयाँ आँगुरसँ संकेत कयलनि।

छोटकी मैंयाँ, लग जा ठाढ़ भेलखिन।

'खीर बनल ?' अस्फुट शब्द बहरायल।

छोटकी मैंयाँ किछु नहि बाजल रहथि।

'जाउ, खीर रान्हि लियऽ। गाममे हकार पठा दियौ।'

छोटकी मैंयाँकेँ नहि रहि भेलनि। हिंचुकी सुनि बड़की मैंयाँ बलपूर्वक आँखि खोललनि–'बताहि नहितन ! हम एखन छी ने ! जाउ, काज सभ झटझट ओरिआ लियऽ। हम भगवानसँ लड़ि रहल छी। जा हमर लछमी द्वारि नइ नँघतीह, परिछनि-चुमान नइ हेतनि, हम नइ जायब।'

वातावरण गंभीर भऽ उठल। छोटकी मैंयाँ विचित्र धर्मसंकटमे छलीह।

देयादिनीक छोह, आत्माकेँ कचोटैत रहनि। इच्छा होनि, लगसँ क्षणो भरि लेल हेठ नहि होथि। मुदा आइ धरि हुनक आदेश टारबाक साहस नहि भेल रहनि, तँ आइ कोना नहि मानितऽथिन

हकार पड़ल। विधिगति खीरो-पूड़ी बँटा गेल। एके आँगनमे जीवनक दू रंग लक्षित भऽ रहल छल। हवा बोझिल सन छल। बेर लुकझुक कऽ रहल छलै। जेनरेटरक प्रकाशसँ सौंसे आँगन-घर आलोकित छल। मुदा विषादक अदृश्य छाया अपन प्रभाव बढ़ौने जा रहल छल। काजक आँगन होइतहु स्थिर, शांत सन। भानस-भात भेल छल। बीच आँगनमे चुमानक अरिपन दैत सुदामदाई कैक बेर नोरयलीह। फेर सम्हरलीह। परिछनक डाला ओरियाकऽ भगवती-ओसारपर धऽ अयलीह। एकबेर जाकऽ कोहबर-घरक बात-व्यवस्था देखि लेलनि। भतीजी-भतीजपुतहु सभ, सभ किछु ओरियौने रहनि।

फेर सहटिकऽ माय लग चलि अयलीह। हुनक आहटि पाबि बड़की मैंयाँ आँखि खोललीह। हाथक संकेतसँ पुछलखिन-'कनिया एलै ?'

'नइ।'

आर लग अयबाक संकेत कयलखिन। आँखि मुननहि बजलीह-'सरिसो-केराव ओरिआ लयह। रानीटोलवाली के होश नइ रहतनि।'

सुदामदाई किछु नहि बजलीह। माथक आकृति टा निहारैत रहलीह।

'भाय सभ कतऽ छथुन ?'

'दलानपर। बजा दियौ ?'

मूड़ीकी संकेत पबितहि बेटा सभ अयलखिन। बड़की मैंयाँ आस्तेसँ बाजलि-'लकड़ी-जारनि चिरा लयह आब ! आ हँ, हम रत्तीक ट्रक सऽ जायब। आर दोसर गाड़ीपर नइ जायब। सब ओरिऔन केने जाह।'

ता दलानपर किछु हड़हड़ा उठल। लगले धियापुता सभ दलानपर कचबच करऽ लागल-कनियाँ आबि गेलीह ! बड़की मैंयाँक संकेतपर भगवती-दुआरिपर गोसाउनि-गीत

होबऽ लागल । एक देयादिनी बड़की मैंयाँ लग रहलीह । बाकी सभकेँ ओ विधि लेल पठा देलखिन ।

कनियाँक परिछनि भेल । चुमान-कोबर-मिनती सभ होइत-होइत राति बेसी भऽ गेल । बेराबेरी लोक जाय आ आबय । बेरक अँटकर लगबैत बड़की मैंयाँक बेचैनी बढ़ल जा रहल छल । हाथसँ इशारा करैत पुछलनि--'आँगनमे सभक खान-पीन भऽ गेलह ?'

बेटी सहमतिमे मूड़ी डोलबैत बजलीह--'हँ, पाहुनो-परक खा लेलनि ।'

बड़की मैंयाँक चेहरापर शांति झलकऽ लागल रहनि । बेर-बेर सेप घोंटबाक प्रयास करथि । बेटा-पोता सभ पंचपात्रमे गंगाजल लेने ठाढ़ रहथिन । दुपहरियेमे गोदान करा देल गेल रहनि । अपने इच्छा प्रकट कयने रहथिन । किछु काल पहिने धरि आंगनमे दाबल कण्ठे 'शुभे-शुभे' क गीत छिड़िआयल छल । एखन विचित्र निस्तब्धता सभकेँ दबौने जा रहल छल । सौंसे आँगनक स्त्री-पुरुष उतरबरिआ असोरापर साँस रोकने आगत क्षणक सामना करऽ लेल स्वयंकेँ तैयार कऽ रहल छल । अद्‌भुत छल ई क्षण । एकटा अध्याय समाप्त होबऽ जा रहल छैलै आ नव अध्याय जुटि रहल छल । बड़की मैंयाँक शरीरमे पुनः चेतना अयलनि । संकेतसँ बेटीकेँ पुछलनि--'मिनती भेलै ? गोर लगली कनियाँ गोसाउनिसिरे ?'

सुदामदाइ बाझल कण्ठ बजली--'हँ, भऽ गेलै ।'

'लेने अबहुन ! गोर लगा दयह । असिरबाद दऽ दियनि !'

मिझाइत दीपक ज्योति पुनः तेज भऽ उठल । बर-कनियाँ आबि गोर लगलखिन । बड़की मैंयाँ हाथसँ माथ सोहरा अस्पष्ट शब्दे किछु बजलीह आ जयबाक संकेत कयलनि ।

क्षणे बाद सुदामदाइक हाथ धऽ संकेत कयलनि-- 'आब हम जाइ छी !'

सुदामदाइ जा हाथ सक्कतसँ धरितथि, हाथ निश्चेष्ट भऽ खसि पड़ल । तीन पीढ़ीसँ घर सम्हारऽवाली लक्ष्मी, नव लक्ष्मीक स्वागत कऽ विदा भऽ चुकल छलीह । चारूकात कन्नारोहटि पसरि गेल । सभठाम फोन लेल मोबाइल घनघनाय लागल ।

--ज्योत्स्ना चन्द्रम

पाठ सन्दर्भ :

पारिवारिक आ सामाजिक सद्‌भावना पर आधारित प्रस्तुत पाठमे संयुक्त परिवारक दृश्य देखाओल गेल अछि। सद्‌भावना रहलाक कारणे कम्मो जगह मे पैघ परिवारक स्नेहपूर्वक सामंजस्य होइत अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) मुजौनाबाली किनक पुतोहु छलथिन ?
   (ii) मुजौनाबाली किएक घबरायल छलीह ?
   (iii) अपन घबराहटि दूर करबाक लेल मुजौनाबाली किनका गोहराबथि ?
   (iv) मुजौनाबालीक परिवारमे आँगन गुने लोकक संख्या बेसी रहनि कि लोकक गुने आँगन पैघ ?
   (v) अफरात जगह-जमीन रहितो तीनूमे सँ क्यो आँगनसँ बहाराय लेल राजी नहि छलाह-किएक ?
   (vi) तीनू भाइक भीन रहितहुँ कोन-कोन वस्तु सझिया छलनि।
   (vii) सुदामदाइ के छलीह ?
2. आशय स्पष्ट करू–
   अफरात जगह-जमीन रहितो तीनूमे सँ क्यो आँगनसँ बहराय लेल राजी नहि।
3. सही उत्तरमे सहीक निशान (√) लगाउ–
   (i) समय कोना बीतै छै, से लोक एहिना कऽ बुझि पबैछ।
   (ii) तीनू भाइ आब छथियो।
   (iii) आँगनमे अइहबक फड़ छनायल।
   (iv) एको घोंट पानि कंठसँ नीचा गेलनिएँ काल्हि सँ
   (v) हम सभकेँ मोनसँ आशीष दै छिऐ।
4. रिक्त स्थानक पूति करू :
   (i) बड़की मैंया ओछानेपर पड़ल-पड़ल सभठाम ..... छलीह।
   (ii) मुदा कष्टक ..... मुँह पर देखार भऽ जानि।

(iii) हमरा सोझा हमर चारु बेटामे कहियो भतभेद ..... भेल।

(iv) भंडारक चाबी एखनो ..... धयल छनि।

(v) जा हमर लछमी ..... नइ नँघतीह, परिछनि चुमान नइ हेतनि ..... नइ जायब।

5. भाषा-बोध

(i) प्रस्तुत पाठमे अव्यय शब्द चुनि कऽ लिखू

(ii) निम्नलिखित कहबी सँ वाक्य बनाउ–

रंग मे भंग हयब

करेज धड़कब

भगवान सँ लड़ब

आत्मा कचोटब

हाथ बँटायब

6. सोच-विचार

प्रस्तुत पाठमे वर्णित बड़की मैंयाक विचार लिखू।

7. शब्दार्थ–

लय–तान, तर्ज, भास

सुमिरथि–स्मरण करथि

गोहराबथि–प्रार्थना करथि

आबाजाही–आयब-जायब

प्रतिवाद–विरोध

नहुएँ–धीरे सँ

■

कुम्हारक चाक

घूमि रहल ई चाक सदच्छन।
घुमा रहल एकरा कुम्हार अछि डंटा हाथेँ रहि-रंहि छन-छन।
घूमि रहल…।

अनलक माटि पानि दए सनलक,
अकड़ी कंकर बीछि हटओलक,
लाते-लातं बनाकए आहिन–
थम्हा माटिक गोल बनौलक,
सोचि रहल की वस्तु बनाबी चुक्की बैसि कुम्हार मनहि मन।
घूमि रहल …।

रखलक पानि आनि मटकूरी,
डोरी राखि बनौलक छूरी,
माटिक थम्हा राखि चाकपर–
हाथे पकड़ल माटिक मूरी,
उतरि रहल बनि वस्तु चाकसँ देखितहिँ ढेरक ढेर दनादन।
घूमि रहल ···· ।
पसरि गेल बाजार वस्तु केर,
तौला, घैला, मटकूरी केर,
माँठ नाद सन पैघ वस्तु लए
छोट दिवारी तक ढेरक ढेर,
टारी, टारा, ढकना, सरबा, सुब्र साकार कुम्हारक चिंतन।
घूमि रहल ···· ।

–मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'

पाठ सन्दर्भ :

कुम्हारक चाकक सजीव चित्रण एहि पाठमे भेल अछि। कुम्हार डंटा हाथेँ चाककेँ घुमा रहल छथि। कुम्हार मॉटि आनि, आँकड़ बीछि लात-हाथसँ मॉटि सानि गोल बना चाक पर तौला, घैला, मटकूरी आदि बनबैत छथि। चाकक सदृश कुम्हारक चिंतन सेहो घूमि रहल अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. (i) **कुम्हार कथी पर वस्तु बनबैत छथि ?**
   (ii) **कुम्हार बासन बनेबासँ पूर्व मॉटि के की करैत छथि ?**
   (iii) **कुम्हार कोन वस्तु सभ बनबैत छथि ?**
   (iv) **कुम्हार बासन बनेबा काल की चिंतन करैत छथि ?**

2. आशय लिखू :

(i) सोचि रहल की वस्तु बनावी, चुक्की बैसि कुम्हार मनहिमन घूमि रहल ..... ।

(ii) उतरि रहल बनि वस्तु चाकसँ देखितहिँ ढेरक ढेर दनादन । घूमि रहल ..... ।

3. सही उत्तरमे (√) लगाउ

(i) कुम्हार माटिसँ बासन बनबैत अछि ।

(ii) कुम्हार मशीनसँ वस्तु बनबैत अछि ।

(iv) कुम्हार तौला, घैला, मटकूरी चाकसँ बनबैत छथि ।

4. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) घूमि रहल ई ..... सदच्छन ।

(ii) थम्हा माटिक ..... बनौलक ।

5. भाषा बोध :

शब्दार्थ :

चाक : जाहि पर माटिक बासन बनैछ

सदच्छन : सदिखन

थम्हा : माटिक गोल लोदा

तौला, घैला, मटकूरी, दिवारी, टारू, टारी

ढकना, सरबा–माटिक बासन

(i) पाँचटा संज्ञा शब्द चुनि विषेषण बनाऊ ।

6. सोच-विचार :

(i) कुम्हार द्वारा बनाओल गेल बासनक उपयोग की अछि ?

■